मासिक

अरफात किरण

रायबरेली

इन्साफ़ का तराज़ू

"आज इन्साफ़ सूरत पहचान कर, नाप तौल कर, देखभाल कर, सोच समझ कर, किया जाता है। मामला अपने किसी अज़ीज़, किसी हम मज़हब, अपनी बिरादरी वाले, अपने क़बीले वाले का हो तो इन्साफ़ के लिये दिल खुल जाता है। तक़ाज़ा पैदा हो जाता है, इन्साफ़ करना आसान मालूम होता है, लेकिन इन्साफ़ का मामला किसी ऐसे व्यक्ति का हो जिससे कोई ख़ूनी रिश्ता नहीं, जिसके साथ इन्साफ़ करने में कोई ख़ास दुनियावी फ़ायदा नहीं, तारीफ़ व प्रशंसा नहीं, बल्कि टोंके जाने की संभावना हो, तो वहां इन्साफ़ के लिये क़दम नहीं उठता, क़लम नहीं चलता।

मगर वो इन्साफ़ जो इन्साफ़ के लिये हो, जो बेलाग हो, पक्षपाती न हो, वो इन्साफ़ बहुत मुश्किल है, और उस इन्साफ़ के लिये अल्लाह के वही बन्दे तैयार होते है जिनके दिल में ख़ुदा का ख़ौफ़ और मानवता का सम्मान होता है।"

हज़रत मौलाना अबुल हसन अली हसनी नदवी रह० (इन्सानियत की मसीहाई)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

OCT 14

₹10/-

मक्का मुअज़्ज़मा व मदीना मुनव्वरा का महत्व

"और जब कोई भी (हरम के अन्दर) किसी बेदीनी का इरादा जुल्म से करेगा हम उसे दर्दनाक अज़ाब चखांएगे।" (सूरह हज: २५)

ये कुरआन मजीद का मुस्तक़िल मोजज़ा और अल्लाह के इल्म की निशानी है। छठीं–सातवीं सदी ईसवी तक सभ्य संसार विशेषतय: अरब को एक ही ख़तरे और एक ही तरह के हमले का अनुभव था और वो मैदानी जंग का ख़तरा और खुले हुए फौजी हमले का अनुभव था। उसका एक नमूना इसी पवित्र धरती ने अबराहा के लश्कर को मारकर और हाथी वाले फ़ौजियों की पेशक़दमी की सूरत में देखा जिसको अल्लाह तआला ने बुरी तरह पस्त कर दिया और नाकाम बना दिया और उसके बारे में एक पूरी सूरह (सूरह फ़ील) नाज़िल फ़रमायी, लेकिन अल्लाह के इस घर और दुनिया के मरकज़ के ख़िलाफ़ गहरी साज़िशों, शब्दों के अर्थों में बदलाव, और बुरे इदारों का कोई अनुभव नहीं था। लेकिन उस अलीम ख़बीर खुदा ने जिसने ये आख़िरी किताब नाज़िल की है उसकी तरफ़ से भी आगाही दे दी कि ऐसा भी हो सकता है और इससे भी ख़बरदार रहना चाहिये और इसकी सज़ा और अन्जाम भी बता दिया कि हम उसको दर्दनाक अज़ाब चखांएगे। अल्लाह तआला ने इस घर की तारीफ़ में "क़यामन लिन्नास" जो एक बहुत अर्थपूर्ण शब्द है। इसका फैलाव व इसके अर्थ की व्याख्या मुश्किल है। इसका मतलब ये है कि मानवता के भविषय और संसार की शांति के लिये बहुत सी व्यवस्थांए और उसकी ज़मानतें इस घर से जुड़ी हुई हैं और जब तक ये उस अज़मत व हुरमत और सुरक्षा व पाकी के साथ क़ायम है। इन्सानियत के रूहानी और अर्थपूर्ण लाभ हैं। जो इसको बुरी नज़र से देखेगा व तौहीद के मरकज़ व संसार की सुरक्षा को अपने शासन का क्षेत्र बनायेगा उसको अल्लाह तआला बर्बाद देगा।

यहीं से पुराने मुहावरों के अनुसार (एक परताब तीर के फ़ासला) सरदार कुरैश और आप स०अ० के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने हमलावर अबराहा से कहा था कि, "उस घर का भी एक मालिक व पासबान है जो उसकी हिफ़ाज़त करेगा।" ये उस समय का एक सही वाक़्या है जिसका उदय उस समय हुआ और क़यामत तक रहेगा।

अर्थ ये है कि अल्लाह के घर का एहतराम और मदीना से अक़ीदत व मुहब्बत इस्लामी शऊर व ईमान और इस्लाम से संबंध की एक निशान और उसकी तरक़्क़ी को मालूम करने के लिये मापक यंत्र (Barometer) का काम करता है। जब तक उन दोनों जगहों से मुसलमान का संबंध और दिली लगाव रहेगा, उन दोनों महबूब व मोहतरम जगहों पर किसी की ग़लत निगाह नहीं पड़ेगी उस समय तक उनका ईमान पक्का और उनका दीन सुरक्षित है।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०
(कुरानी इफ़ादात: ४२१–४२२)

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:१० अक्टूबर २०१४ ई० वर्ष:६

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्ररी- दारे अरफ़ात

सम्पादक
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुद्रक
मो० हसन नदवी

सह सम्पादक
मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

अमरीका की दोहरी पॉलिसी.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हज़रात–ए–हसनैन (रज़ि०) का मिसाली क़दम.....३
हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अल हसनी नदवी

मुसलमानों की जागरूकता.....५
मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

मुहर्रमुल हराम – अहमियत व फ़ज़ीलत.....७
मौलाना ख़ालिद नदवी ग़ाज़ीपुरी

इस्लामी अक़ीदा.....१०
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सहाबा–ए–किराम की महानता.....१२
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी

हिन्दु राष्ट्र – वास्तविकता क्या है.....१३
डॉक्टर सैय्यद क़ासिम रसूल इलियास

मुहर्रमुल हराम और ताज़ियादारी.....१५

मानवाधिकार का पहला घोषणापत्र.....१७
जनाब हसन इक़बाल

कैम्पों में शरण – एक मजबूर और बेबस जीवन..१९
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

जाँ निसारी.....२०
अबुल अब्बास ख़ाँ

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

सम्पादकीय

अमरीका की दोहरी पॉलिसी

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सोवियत यूनियन के पतन के बाद अमरीका ही अकेला है जो दुनिया को ग़ुलामी शिकंजे में जकड़े हुए है और अगर ग़ौर किया जाये तो उसके पीछे यहूदी दिमाग़ काम कर रहे हैं, जिसने अपनी शातिर दिमाग़ी से अमरीका को अपने क़ब्ज़े में कर रखा है और अमरीका के संविधान निर्माताओं की ये बात शत प्रतिशत सही हो रही है कि, "अगर यहूदियों को अमरीका में रहने की इजाज़त दे दी गयी तो वो दिन दूर नहीं कि अमरीका में रहने वाले ग़ुलाम होंगे, और ये मुट्ठी भर यहूदी उन पर शासन कर रहे होंगे।"

अमरीका ने इधर कुछ सालों से अन्तर्राष्ट्रीय रूप से जो कार्यवाहियां की हैं और उनकी जो कारण बताये हैं और उन कार्यवाहियों को आवश्यक घोषित कर दिया है उनका पूर्ण रूप से अध्ययन करने वाले ख़ूब समझते हैं कि इसके पीछे क्या कारण हैं। कोई आंखे ही बन्द कर ले तो बात और है लेकिन अगर ज़रा भी आंखे खोल कर जायज़ा लिया जाये तो साफ़ नज़र आता है कि ये कार्यवाहियाँ मानवीय भावनाओं और एहसासों से बहुत दूर हैं। यूरोप व अमरीका के अन्धकारमय युग में जो काम हो रहा था वही अब नये संदर्भों और नयी पैकिंग से किया जा रहा है। बक़ौल अकबर इलाहाबादीः

अंधेर हो रहा था बिजली की रोशनी में

ईरान व इराक़ की जंग के पीछे अमरीका का हाथ था। सद्दाम हुसैन के बहाने इराक़ पर अमरीका ने इसलिये हमला किया कि वहाँ लोकतन्त्र बहाल किया जाये। फिर मिस्र में लोकतान्त्रिक शासन के परख़्चे अमरीका के इशारे पर उड़ाये गये और मुर्सी शासन का तख़्ता पलट दिया गया। पीड़ितों के दर्द का रोना रोने वालों को बर्मा का अत्याचार दिखाई नहीं देता। ग़ाज़ा के पीड़ित मुसलमानों की चीख़–पुकार की दास्ताने उनके कानों में नहीं पड़ती। उनको यहूदी नज़र नहीं आते। औरतों और बच्चों को क़त्ल करने में उनको आर नहीं होता। दुनिया के किसी क्षेत्र में ईसाई आबादी ज़रा भी परेशानी में पड़ी हो तो अमरीका और संयुक्त राष्ट्र संघ चीख़ उठता है। इसके अतिरिक्त दुनिया कि किसी और आबादी पर अत्याचार के पहाड़ तोड़े जाएं तो कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। और फिर दावा ये कि अमरीका पीड़ितों का हमदर्द है। ये दोग़ली पॉलिसी किसी चीज़ का पता देती है?और इसका क्या परिणाम होगा?

अफ़सोस अरब देशों पर है। जो कमज़ोर व लाचार हैं और अमरीका के सामने हाथ जोड़ने पर मजबूर हैं। इस हालत में वो सिर्फ़ अपनी ऐश परस्ती और ग़फ़लत से पहुंचे। यद्यपि बहुत देर हो चुकी है मगर अब भी वक़्त है। अगर नये सिरे से प्लानिंग की जाये और मोर्चा लिया जाये तो हालात बदल सकते हैं। लेकिन अगर स्थिति वही रही तो आज शासनों को जो बैसाखियाँ मिली हैं कल वो सब मुंह के बल गिरती नज़र आयेंगी।

दूसरी तरफ़ आम मुसलमानों के ऊपर भी बड़ी ज़िम्मेदारी है। हालात इस हद तक बिगड़ जाने के बावजूद अभी तक वे कार्यवाही करने से दूर नज़र आते हैं और अगर कोई क़दम नज़र आता भी है तो वो सही जगह पर नहीं हो रहा है। वो हवा में हाथ–पाँव मारना शुरू कर देते हैं, जिसका कोई परिणाम नहीं। ज़रूरत इस बात की है कि एक तरफ़ दुआओं का एहतिमाम करें और दूसरी ओर शिक्षा के क्षेत्र में सरगर्म हों। समाज सुधार की कोशिशें करें, और इसके बाद फ़ौरन अगर अपनी ज़िम्मेदारी को समझें और बजाए दूसरों की कमियाँ गिनाने के अपनी कमियों को दूर करने में लग जायें। तो जल्द ही इसके प्रभाव बड़े स्तर पर सामने आ सकते हैं।

हज़रात-ए-हसनैन (रज़ि०) का मिसाली क़दम

उम्मते मुस्लिमा के लिये मार्गदर्शक

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

हज़रात हसनैन रज़ि० का मामला भी अल्लाह की आयतों और अल्लाह की निशानियों में से है। आप स०अ० के साथ अल्लाह तआला का ख़ास मामला रहा है और अल्लाह तआला ने उनको जो बेहतर से बेहतर नेमते अता की हैं, उनमें से आपके ये दो फूल भी हैं जिनको "रैहानतु (रसूलुल्लाह स०अ० के फूल)" का लक़ब मिला है।

मैं इतिहास में अपनी जानकारी की रोशनी में कहता हूँ कि हज़रत हसन रज़ि० का क़दम बिल्कुल सही था जो उन्होंने हज़रत मुआविया रज़ि० के मामले में किया था और फिर खुद आप स०अ० ने हज़रत हसन रज़ि० की तरफ़ देखकर फ़रमाया था कि: (मेरा ये बेटा सरदार है, उम्मीद है कि अल्लाह तआला इसके ज़रिये मुसलमानो की दो बड़ी जमाअतों में सुलह कराएगा)

ये बात हज़रत हसन रज़ि० के लिये सिर्फ़ एक ख़बर नहीं थी बल्कि ये आप के लिये एक वसीयत थी। रसूलुल्लाह स०अ० की मंशा थी। इसीलिये हज़रत हसन रज़ि० ने इसको अपने लिये ख़ालिस हुक्म-ए-नबवी समझा और उसके मुताबिक़ जो क़दम उठाया वो बिल्कुल सही था, कि मामला हज़रत मुआविया रज़ि० के साथ था। जो सहाबी-ए-रसूल थे। अल्लाह की वही के कातिब थे। क़रीबी अज़ीज़ और रिश्तेदार थे और कोई बात बग़ावत का कारण और तलवार उठाने की न थी। उनके विरोधी सैन्य अभियान का नतीजा खून बहने के सिवा कुछ न होता। उनको जब कुछ जोशीले लोगों ने ताना दिया कि ये आर की बात है तो फ़रमाया: (ये आर जहन्नम की आग से बेहतर है)

इसी तरीक़े से जब मामला यज़ीद का आया तो हज़रत हुसैन रज़ि० का क़दम शत प्रतिशत सही था। हज़रत हुसैन रज़ि० को यही करना चाहिये था, वरना क़यामत तक के लिये आरम्भिक युग का कोई नमूना हमारे सामने न होता कि जब कोई ग़लत हुकूमत क़ायम हो जाये। और जब समाज के किरदार के बिगड़ने का ख़तरा पैदा हो जाये, जब हुकूमत बजाए "अम्र बिल मारूफ़ नही अनिल मुनकर" के और बजाए तक़वा और पाकी पैदा करने के और बजाए खुदा से डरने और इबादत के शौक़ बनाने के सैर व शिकार व ऐश व लज़्ज़त पाने का ज़ौक़ पैदा होने और दौलत व वर्चस्व का ग़लत इस्तेमाल होने लगे तो हमारे सामने कोई नमूना इसका भी होना चाहिये कि कोई अल्लाह का बन्दा उठे और उसको चैलेंज करे और उसके मुक़ाबले में आ जाये। अगर ये न होता तो आप इस्लाम के बाद के इतिहास में देखिये कि सारी की सारी इस शेर की तामील होती है।

चलो तुम उधर को, हवा हो जिधर की

जो ग़लत हुकूमत आ जाती, क़ायम हो जाती, हम बस उसके अधीन हो जाते कि यही अल्लाह की मर्ज़ी है, हमारे पास कोई नमूना नही है। हमारे पास कोई अपनाने योग्य मिसाल नहीं है कि हम कुछ कर सकें। फिर उसमें ये अंदेशा है कि इससे इस्लामी एकता पर असर पड़ेगा। मुसलमानो की सामूहिकता ख़तरे में पड़ जायेगी। सब ख़ामोश तमाशाई बने रहेंगे।

इसके लिये हज़रत हुसैन रज़ि० का नमूना क़ायम किया गया कि नहीं कुछ लोग ऐसे होने चाहिये कि वो उसका मुक़ाबला करने के लिये मैदान में आयें और किसी चीज़ की परवाह न करें। इसीलिये बाद में अगर आप मुजाहिदीन का इतिहास पढ़े तो और उनकी मानसिकता का अध्ययन भी करें तो और उनकी वार्तालाप भी अगर देखें और उनकी बातें भी सुने तो हमको मालूम होगा कि अलग-अलग जमाने और देशों में जो सुधार की तहरीकें वजूद में आयीं और जो इन्क़िलाबी कोशिशें परवान चढ़ी उन सब में हज़रत हुसैन रज़ि० का नमूना काम कर रहा है। अमीर अब्दुल क़ादिर जज़ाएरी हों या अब्दुल करीम रीफ़ी, शेख सनवी हो या शेख़ शामिल दाग़स्तानी या सैय्यद अहमद शहीद और शाह इस्माईल शहीद रह० सबके हौसलों को बढ़ाने वाली, उनके अन्दर जज़्बा पैदा करने वाली चीज़ हज़रत हुसैन रज़ि० का ये नमूना है कि ये कोई बचपने की हरकत नहीं कोई भड़काऊ, कोई फूट

डालने वाली हरकत नहीं, बल्कि हुसैनी सुन्नत हैं।

ये सिलसिला हमारे इस दौर तक क़ायम है। तहरीक़ ख़िलाफ़त जिसका लखनऊ एक बड़ा केन्द्र था। इसके जो सबसे बड़े लीडर थे यानि रईसुल अहरार मौलाना मुहम्मद अली जौहर रह0 उनके अन्दर भी हज़रत हुसैन रज़ि0 की तक़लीद का जज़्बा काम कर रहा था। वो कहते हैं:

पैग़ाम मिला था जो हुसैन इब्ने अली को।
ख़ुश हूं कि वो पैग़ाम–ए–वफ़ा मेरे लिये है।।

हज़रत हुसैन रज़ि0 के पोते हज़रत ज़ैनुलआबदीन के साहबज़ादे ज़ैद बिन अली बिन हुसैन रज़ि0 जब हिशाम बिन अब्दुल मुल्क के (जो यज़ीद से यक़ीनन कुछ बेहतर ही होगा) मुक़ाबले में खड़े हुए तो इमाम अबू हनीफ़ा रह0 ने दस हज़ार दिरहम जो उस ज़माने के लिहाज़ से और इमाम के एतबार से (जो एक मुजतहिद और फ़क़ीह थे कोई पूंजीपति नहीं थे) बहुत बड़ा अतिया है। उनको भेजा और कहा कि आप इससे काम लीजिए और फिर इसके बाद जब मुहम्मद ज़ुन्नफ़्स अज़्ज़की (मुहम्मद ज़ुन्नफ़्स अज़्ज़की कौन हैं? मुहम्मद ज़ुन्नफ़्स अज़्ज़की बिन अब्दुल्लाह अलमहज़ बिन हसन बिन हसन मुसन्ना बिन हसन मुज्तबा बिन सैयदना अली मुरतज़ा रज़ि0) जब मन्सूर के मुक़ाबले में खड़े हुए (मन्सूर कौन? हारून रशीद का दादा और बग़दाद में अब्बासी ख़िलाफ़त का संस्थापक) तो इतिहास की गवाही ये है कि इमाम अबूहनीफ़ा और इमाम मालिक रह0 ने उनका साथ दिया और रक़म भी भेजी और हसन बिन क़हतबा जो मन्सूर का जरनल था, इमाम अबू हनीफ़ा रह0 ने रोक दिया कि तुम्हारे लिये जायज़ नहीं कि मुहम्मद ज़ुन्नफ़्स अज़्ज़की और उनके भाई इब्राहीम से जंग करो। ये दो भाई थे, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह जो मदीना में खड़े हुए और हदीस में मौजूद है कि मेरी औलाद में ज़ुन्नफ़्स अज़्ज़की होगा जो मदीना में और इहजार–ए–ज़ैत में शहीद होगा। ये पेशीन गोई आप पर सादिक़ आयी। दूसरे भाई इब्राहीम थे जो बग़दाद में खड़े हुए थे लेकिन तारीखों के इख़्तिलाफ़ की वजह से ज़रा सा फ़र्क़ हो गया। इसीलिये दोनों मिलकर मुक़ाबला नहीं कर सके। इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मालिक रह0 ने दोनों का साथ दिया और रक़म भेजी।

अब अगर कोई हज़रत हुसैन रज़ि0, ज़ैनुल आबदीन रज़ि0 और मुहम्मद ज़ुन्नफ़्स अज़्ज़की रह0 के इस क़दम पर एतराज़ करता है और कहता है कि ये इस्लामी दृढ़ता और इस्लामी अधिपत्य के ख़िलाफ़ एक ग़लत क़दम और अन्जाम की परवाह किये बग़ैर की गयी कार्यवाही थी, तो वो मानो ये कहता है कि वो इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मालिक रह0 से ज़्यादा फ़क़ीह और मुजतहिद है और ज़्यादा ख़ुदा से डरने वाला और इस्लाम का दोस्त, और आप ये भी याद रखें कि इमाम अबू हनीफ़ा रह0 और इमाम मालिक रह0 न सिर्फ़ फ़क़ीह और मुजतहिद थे बल्कि ऐसे फ़क़ीह और मुजतहिद थे कि मैं शरीअत और फ़िक़ और मज़हब के तुलनात्मक मुक़ाबले के एक तालिबे इल्म होने की हैसियत से कहता हूं कि मिल्लत में इन दोनों की मिसालें नहीं मिलतीं। उन्होंने नहीं सोचा कि इस्लाम के श्रेष्ठ मूल्यों के ख़िलाफ़ ये लोग क़दम उठा रहे हैं। उनके पास क्या फ़ौजी ताक़त है, इसका नतीजा सिवाए इन्तिशार के कुछ नहीं, दोनों ने बिल्कुल सोच समझ कर उनकी ताईद की।

ये हम अहले सुन्नत का इम्तियाज़ है कि हम सहाबा किराम रज़ि0 की अज़मत करते हैं। उनकी फ़ज़ीलत के क़ायल हैं और अहले बैत से मुहब्बत रखते हैं और अपने सरमाया पर फ़ख़्र करते हैं।

सहाबा किराम रज़ि0 की अज़मत व अक़ीदत, उनकी अफ़ज़लियत का अक़ीदा और उनकी ख़िलाफ़त को बरहक़ मानना और हज़राते हसनैन सैयदना हसन रज़ि0 और सैयदना हुसैन रज़ि0 दोनों के क़दमों को बिल्कुल सही समझना और उनके लिये ख़ैर की दुआ करना और उनसे मुहब्बत करना, ये हमीर आपकी पहचान है और हमको इस पर फ़ख़्र है। हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि हम इस पर ज़िन्दा रहें और इसी पर दुनिया से जायें।

ख़ुदा का ख़ौफ़

"किसी देश या जाति की सुरक्षा व बचाव के लिये लोगों को स्वार्थ, अत्याचार, बेईमानी, और ख़्यानत से बचाने के लिये अस्ल ताक़त तो ख़ुदा का अक़ीदा और डर है। जब किसी इन्सान के दिल व दिमाग़ में ये अक़ीदा पैदा हो जाये कि एक ऐसी हस्ती है जो अंधेरे उजाले में मेरी निगरानी करती है और मुझे उसके सामने जवाब देना है तो वो कोई ग़लत काम नहीं कर सकता। सुधार के लिये इससे बेहतर कोई नुस्ख़ा नहीं। ये वो अस्ल ताक़त है जो चोरों को भी निगेहबान बना देती है।

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह०

मुसलमानों की जागरूकता

मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

आज सम्पूर्ण मानवता को आर्थिक व सामाजिक संकट, दैवीय आपदाओं, जातिवाद व क्षेत्रवाद और अलगाव पसंदी के रूझानों के कारण वश युद्धों का सामना करना पड़ रहा है। अपने जायज़ व नाजायज़ अधिकारों व मांगो के लिये व्यक्ति व समूह आतंकवाद की राह अपना रहे हैं। जिसके परिणामस्वरूप मानव जीवन व मानव संस्कृति को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। लाखो इन्सान भुखमरी, सूखा व जंग के कारण मौत का निवाला बन रहे हैं। अप्रिय घटनाओं व प्राकृतिक आपदाओं की बहुतायत है। लाखों लोग आवश्यक आवश्यकताओं के न मिलने से संघर्षपूर्ण जीवन बिता रहे है। अनैतिकता व अशांति भी अपने चरम पर है।

एक ओर तो मनुष्य उन परेशान करने वाली समस्याओं का सामना कर रहा है, दूसरी ओर पश्चिमी शासक व लेखक, राजनेता और शांति के ध्वजवाहक सम्पूर्ण मानवता की इन समस्याओं को हल करने के बजाए अपना ध्यान और सम्पूर्ण संसार का ध्यान एक ऐसे ख़तरे और गंभीरता की ओर मोड़ने में व्यस्त हैं जिसका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है और ये मानसिक भय की पैदावार है, वास्तविक में ख़तरों से मुंह मोड़ा जा रहा है। जो सम्पूर्ण संसार के लिये वास्तव में गंभीर परिणाम उत्पन्न करने वाला है।

इस दौर में मीडिया इन लाखो लोगों की ख़स्ताहाली से नज़रे चुरा रहा है जो संसार के विभिन्न क्षेत्रों में मुसीबतों का शिकार हैं और उन लाखो एशियाई व अफ़्रीक़ी नागरिकों की क़िस्मत की महरूमी को नज़रअन्दाज़ कर रहे हैं जो दो वक़्त की रोटी के मोहताज हैं। हालांकि उनकी ख़बरों को खोजने की बढ़ी हुई ताक़त दूरगामी है जो छोटी–छोटी घटनाओं और छोटे–छोटे हादसों को उन तक पहुंचाती है। उन्हें एक ही समय में मोटरों और बसों के हादसे, दूर–दराज़ के क्षेत्रों में ट्रेनों के हादसे, जहाज़ों के अपहरण, बैंको की लूट या किसी भी व्यक्ति के लुट जाने का पता रहता है, और वे इन घटनाओं को बड़ी तफ़्सील से पेश करते हैं। दूसरी ओर वे बड़ी पीड़ा को नज़रअन्दाज़ कर देते हैं। यदि वे मुसीबतों व समस्याओं का सामना कर रहे हैं, इन्सानी बस्तियां और दम तोड़ती ज़िन्दगियां इन ख़बरी एजेन्सियों के प्रकार से भिन्न हैं। उनका रंग व ख़ून उनके रंग व ख़ून से अलग है, उनकी जाति उनसे अलग है, इनकी भाषा उनकी भाषा से मेल नहीं खाती और इनका दीन उनके दीन से भिन्न है।

संसार बहुत धोखे में है कि यूरोप धार्मिक व जातिवादी पक्षपात से ऊपर उठ गया है। वह शुद्ध धर्मनिरपेक्ष है और अन्तर्राष्ट्रीय विचार रखता है। यह केवल धोखा और फ़रेब है जिसमें अच्छे–ख़ासे पढ़े लिखे लोग पड़े हैं। पश्चिम के साथ होते लगातार अनुभव ने बात साफ़ कर दी है कि पश्चिमी दुनिया कभी भी धार्मिक पक्षपात, वर्गीय खींचतान और साम्प्रदायिकता से स्वतन्त्र नहीं रही। उनके सारे साधन व एजेंसियां चाहे मानवाधिकार की हों या रिलीफ़ की हों और चाहे शिक्षा व प्रशिक्षण की हों या तकनीकी हों, सब की सब धार्मिक प्रभाव व जातिवादी पक्षपात में डूबे हुए हैं।

धार्मिक विचार या जातिवादी पहचान कोई ऐब की बात नहीं यदि वो स्वीकार्य हो। जो चीज़ ख़तरनाक और चिंतनीय है वो ये कि दीनी विचार और दीनी विचार नकारात्मक हो यानि ये विचार की दूसरे दीनों व धर्मों से नफ़रत की जाये और दूसरी क़ौमों से नफ़रत और बुराई की सोच रखी जाये।

यूरोप का विचार हमेशा ही से नकारात्मक रहा है। वह अपनी भाषा, सभ्यता, दृष्टिकोण की दावत देने वाला ही नहीं बल्कि दूसरों की भाषा सभ्यता और दृष्टिकोण को मिटाना चाहता है। उसने दूसरी भाषाओं, सभ्यताओं और इतिहास का अध्ययन इसी आधार पर किया है और उसकी रिसर्च संस्थांए आधार पर काम करती हैं।

यूरोप की ओर से वैचारिक हमले का आरम्भ इस प्रकार से हुआ कि सबसे पहले इस्लाम का अध्ययन किया गया और ये इसलिये नहीं कि उसे इस्लाम से मुहब्बत थी या उनके अन्दर इस्लामी सभ्यता के उत्थान का भाव था, बल्कि केवल इस्लामी इतिहास को बिगाड़ कर इस्लामी ज्ञान व शिल्प के क्षेत्र में बदलाव करके और उसके महान नेतृत्वों के चरित्र को बिगाड़ कर प्रस्तुत करने के लिये उसने सबसे पहले आप स0अ0 को विषय बनाया या आरम्भ के इतिहास को। इन सभी कोशिशों के पीछे ये भाव कार्यरत रहा कि इस्लाम के पैरोकारों और दीन के मतवालों को नयी नयी समस्याओं में उलझा कर रखा जाये और

उनके दिमाग़ में शक व शुब्हा पैदा किया जाये। हालांकि सकारात्मक रूप तो ये था कि यूरोप वाले हज़रत मसीह अलै0 की ज़िन्दगी और उनकी शिक्षाओं का प्रचार करते और पश्चिमी उन्नतिप्राप्त सभ्यता और संस्कृति से दुनिया को परिचित कराते। लेकिन पश्चिम और यूरोप वालों के यहां हमेशा नकारात्मक पहलू को वरीयता प्राप्त रही है। यही कारण है कि वो सच्चाई के बजाए वहम की भूल भुलैया में भटकते रहते हैं। इसी प्रकार उनकी ख़बरी एजेसियां ख़्यालों और अनहोनियों को हवा देती रहती हैं। वो इसको सही समझती हैं कि इस्लामी दुनिया को भयानक और ख़तरनाक अज़दहा बनाकर पेश करें। वो दुनिया की आखों में धूल झोकती हैं। वो इस्लामी दुनिया को ज्वालामुखी बनाकर पेश करती हैं, जिसके फटते ही कायनात बिखर जायेगी। वर्तमान सभ्यता व संस्कृति तार–तार हो जायेगी और मानवता दम तोड़ देगी। अक़्लमंद फ़िरंगियों और इस्लामी देशों में उनके चेलों व शागिर्दों की लेख व खोजों में बीमार ज़हनियत, ख़ौफ़ व ह्रास और शक व शुब्हे की ज़हनियत जारी व सारी नज़र आती है।

पुराने क़िस्सों में एक क़िस्सा आता है कि एक जिन्न को एक बोतल में बंद करके समंदर में डाल दिया गया। लेकिन लोग हमेशा डरते रहते थे कि कहीं ये जिन्न निकल न आये। यही हालत पश्चिम की है। उसने अपने गुमान में इस्लाम को अपने साम्राज्यी युग की बोतल में बंद कर दिया है लेकिन उसे हर वक़्त ये डर रहता है कि कहीं ये जिन्न थोड़ी से हरकत से फिर बोतल से निकल कर पश्चिम के निर्माण किये हुए सांस्कृतिक महल को ज़मीन में न धंसा दे।

यूरोप में ये डर व ह्रास दिलों में इसी तरह समा गया है कि इस्लामी रूझान और उसके अधिपत्य को समझने के लिये कान्फ्रेंस आयोजित की जा रही है। उन साधनों का पता लगाया जा रहा है जिनसे इस्लामी रूझानों को रोका जा सके और इस्लाम के ख़िलाफ़ ज़हन बनाने के लिये हर प्रकार के साधनों से काम लिया जा रहा है।

ये सारे हरबे केवल इस्लामी दुनिया को हरासां करने के लिये इस्तेमाल किये जा रहे हैं। इसमें दुनिया के बड़े–बड़े अख़बार और अहम मैग्ज़ीन भी शामिल हैं। इनमें न्यूयार्क टाइम्स, सन्डे मैग्ज़ीन, टेलीग्राफ़ और लोमोन्ड इत्यादि सबसे ऊपर हैं। इस्लामी ख़तरे से जुड़े हुए पश्चिम के चोटी के मार्गदर्शक और लीडर भी बयान देते रहते हैं। वे खुले शब्दों में अपनी शंका प्रकट करते हैं और इस्लामी देशों में अपने एजेन्टों को इस्लामी आन्दोंलनो के कुचल देने पर उभारते हैं।

रेडियो और टेलीविज़न से ऐसे प्रोग्राम प्रस्तुत किये जाते हैं जिनमें इस्लामी दुनिया की समस्याओं पर बहस होती हैं और प्रोग्रामों में उन समस्याओं की ओर इस प्रकार इशारा किया जाता है कि ये इन देशों के इस्लाम से जुड़ने का परिणाम है।

इस्लामी देशों के ग़ैरमुस्लिम अल्पसंख्यकों की ख़स्ताहाली का प्रोपगन्डा किया जाता है। ग़ैर इस्लामी देशों में मुस्लिम अल्पसंख्यकों की अस्ल परेशानी और बदहाली को अंधेरे में रखने की कोशिश की जा रही है। इस्लामी देशों में पश्चिमी शासन व्यवस्था की नाकामी के बाद लाज़मी बात है कि इस्लामी दुनिया पश्चिमी नज़रिये से मायूस हो और उससे छुटकारा पाना चाहिये।

इन प्रोपगन्डों को थोड़ी बहुत जो कामयाबी मिली है उसका कारण ये है कि इस्लामी दुनिया में पश्चिम के कठपुतली शासक दिल व जान से उनके साथ हैं। इस्लामी आन्दोलनों को कुचलने के लिये ख़ास तौर पर उन्हें मदद दी जाती है। पश्चिम ने मक्कारी के कमाल से इस्लामी दुनिया के शासकों में इस्लाम से दहशत व नफ़रत पैदा कर दी है। इस्लामी दुनिया के अहम अख़बारों के लेखकों और कालमनिगारों ने अपने पाठकों को पश्चिम के दहशत व भय से इस प्रकार आगाह किया और कर रहे हैं, जैसे इस्लामी दुनिया की सबसे बड़ी और नाजुक समस्या यही है। लेकिन फ़क्र व जिहालत, पसमान्दगी, तानाशाही, शराब और जुर्मों की अधिकता की ओर ये भूले से भी नज़र नहीं उठाते। हालांकि ये इस्लामी ही नहीं पूरी दुनिया की अस्ल समस्याएं हैं। अक्सर इस्लामी देशों में यूरोप की वफ़ादार हुकूमतें क़ायम हैं जो जनता के नाम पर ऐश कर रही हैं। उनकी जनता अत्याचार का शिकार है। बहुत से देशों में चुनाव समाप्त कर दिये गये। यहां सालो साल से लोग क़ैदियों की तरह जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सड़को पर चलते हुए बेगुनाह इन्सानों को क़ैद करके जेलों में भेज दिया जाता है। जहां उन्हें सख़्त तकलीफ़ें दी जाती हैं। लेकिन ये न कोई सोचने की बात है न सभ्यता व संस्कृति से इसको कोई ख़तरा है। इब्लीस को अगर डर है तो बस इस्लाम से है।

मुहर्रमुल हराम

अहमियत व फ़ज़ीलत

मौलाना ख़ालिद नदवी ग़ाज़ीपुरी

मुहर्रमुल हराम का महीना जिससे इस्लामी साल का आरम्भ होता है जिसे इस्लामी जन्तरी में (सन् हिजरी) कहा जाता है। इस महीने के आने से हिजरते नबवी का वो दर्दनाक वाक़्या ताज़ा हो जाता है जब काफ़िरों के सितम से तंग आकर आप स0अ0 ने अपने प्यारे वतन को छोड़ने का फ़ैसला फ़रमाया था और मदीना मुनव्वरा की तरफ़ हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के साथ में कूच किया था। लिहाज़ा हक़ीक़त में इस्लामी साल का आरम्भ हिजरत के विषय से मज़लूमी और बेकसी की एक यादगार है। जब ज़ुल्म व अत्याचार की लोहे की ज़ंजीरों में जकड़ी हुई मानवता ने उसे तोड़ा था और उसकी सरहद से दूर निकल गयी थी और दुनिया को न्याय व इंसाफ़, समानता व बराबरी, एकता व प्रेम, ख़ैरख़्वाही और भलाई, ख़ुद की पहचान और ख़ुदा की पहचान का सबक़ दिया। ख़ुदा की बारगाह में मज़लूमों को फ़तेह व विजय का पैग़ाम मिला और धीरे–धीरे ज़ालिमों का ज़ुल्म उन्हीं के गले का फ़न्दा बन गया। न्याय व दृढ़ता का दौर आरम्भ हुआ और ख़ुदा के बन्दों को सदियों बाद ख़ुदा से सही लौ लगाने का मौक़ा मिला।

बहार अब जो दुनिया में आयी हुई है।
ये पौध सब उन्हीं की लगायी हुई है।।

कितने मुसलमान हैं जिन्होंने इस मुबारक महीने की अस्ल महानता का अन्दाज़ा लगाया है और इस वाक़्ये से सबक़ प्राप्त किया है। जिसने पहले दौर के मुसलमानों पर कामयाबी व कामरानी के दरवाज़े खोल दिये थे। यूं तो आप स0अ0 के ज़माने के सैंकड़ो वाक़्ये हैं जिनकी अपनी जगह एक ख़ास अहमियत है लेकिन हिजरते नबवी का वाक़्या उन सब में एक अलग हैसियत रखता है। लेकिन अफ़सोस कि इस बारे में हमने ग़ौर करना ही छोड़ दिया और इत्तिफ़ाक़ से इस महीने में कर्बला का वाक़्या भी पेश आया जिसमें आप स0अ0 के नवासे हज़रत हुसैन रज़ि0 और उनके साथियों की शहादत हुई जो मज़लूमी और बेकसी का विषय बन गया और मुहर्रमुल हराम की अस्ल महानता कर्बला के मैदान मे गुम होकर रह गयी।

आज मुहर्रमुल हराम के बारे में अगर कोई सोच है तो सिर्फ़ ये कि वो शहादते हुसैन रज़ि0 का गवाह है। आप रज़ि0 के ख़ून से कर्बला की ज़मीन लाल हुई। इस तरह आप स0अ0 के नवासे की शहादत के पर्दे में हिजरत का तज़किरा भी कुछ इस तरह छिप गया है कि कितने मुसलमान हैं जिनको ये भी नहीं मालूम है कि ये महीना आप स0अ0 की हिजरत की अहम यादगार है और यहां से इसकी महानता का सितारा चमका है। ये नहीं जानते कि हिजरत क्या चीज़ है। आप स0अ0 ने क्यों हिजरत की। इसके क्या परिणाम निकले और भविष्य में इस्लामी समाज की दृढ़ता पर इसके क्या प्रभाव पड़े। अब उनके सामने केवल कर्बला का मैदान है और उम्मते इस्लामिया का बड़ा वर्ग इस मैदान में वहम व ख़ुराफ़ात, बिदअत और रस्म व रिवाज की घड़ी सर पर उठाये खड़ा है।

मुहर्रमुल हराम का चाँद नज़र आया और ग़म का समा छा गया। कहीं नौहा पढ़ा जा रहा है तो कहीं मरसिया, अलम, दुलदुल, ताज़िये, ढोल और ताशों का शोर, बिदआत व ख़ुराफ़ात का वो ज़ोर कि अलअमान अलहफ़ीज़।

हालांकि ताज़िये बनाना नाजायज़ होना और उसका दीन के ख़िलाफ़ होना ज़ाहिर है। क़ुरआन मजीद में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का इरशाद है:

"क्या ऐसी चीज़ की परसतिश करते हो जिसे ख़ुद तराशते हो।"

ज़ाहिर है कि ताज़िया इन्सान अपने हाथ से बनाता है और फिर मन्नत मानी जाती है और उससे मुरादें मांगी जाती हैं। इसके सामने औलाद व सेहत की दुआंए मांगी जाती हैं। सजदा किया जाता है। इसकी ज़ियारत को ज़ियारते हुसैन रज़ि0 समझा जाता है। क्या ये सब बातें ईमान की रूह इस्लाम की तालीम के ख़िलाफ़ नहीं हैं?

अल्लामा हयात सिंधी तहरीर फ़रमाते हैं कि राफ़ज़ियों की बुराई में एक ये भी है कि वे लोग इमाम हुसैन रज़ि0 की

क़ब्र की तस्वीर बनाते हैं और उसको सजा कर गली–कूचों में घूमते हैं और या हुसैन या हुसैन पुकारते हैं और फ़िज़ूल ख़र्च करते हैं। ये सब बातें बिदअत व नाजायज़ हैं।

(फ़तावा अहयाउलउलूम, मुबारकपूर पेजः 180)

हज़रत सैय्यद अहमद शहीद रह0 फ़रमाते हैः "राफ़ज़ियों की जो बिदअत हिन्दुस्तान में बहुत ज़्यादा मशहूर हैं उन्हीं में से एक मुहर्रम के महीने में हुसैन रज़ि0 की मुहब्बत में मातम और ताज़ियादारी है। ये बिदअत कुछ चीज़ों पर आधारित है जैसे क़ब्र और मक़बरे की नक़ल, अलम व शुदा इत्यादि। ये चीज़ें बुतसाज़ी और बुतपरस्ती के क़बीले से हैं।" (सिराते मुस्तक़ीमः 59)

इस मसले में सबका इत्तेफ़ाक़ है

इस मसले में बरेलवी, देवबन्दी का इख़्तिलाफ़ नहीं है। जनाब मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरेलवी तहरीर फ़रमाते हैंः "अब कि ताज़ियादारी इस तरीक़ा नामरज़िया का नाम है जो क़तअन बिदअत व नाजायज़ व हराम है।" (रिसाला ताज़ियादारीः 10)

मौलाना अमजद अली साहब आज़मी रिज़वी लिखते हैं कि अलम और ताज़िया बनाने और पेकी बनने और मुहर्रम में बच्चों को फ़क़ीर बनाने और बद्धी पहनाने और मरसिये की मजलिस करने और ताज़ियो पर नियाज़ दिलवाने इत्यादि की ख़ुराफ़ात जो राफ़ज़ी व ताज़ियादार लोग करते हैं उनकी मिन्नत सख़्त जिहालत है और ऐसी मन्नत माननी न चाहिये और अगर मानी हो तो पूरी न करे।

(बहारे शरीअतः 9/35)

और इसी किताब में दूसरी जगह लिखते हैंः "ताज़ियादारी के वाक़्यात कर्बला के सिलसिले में तरह–तरह के ढांचे बनाते हैं और उनको हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ि0 के रौज़े पाक की शबीह कहते हैं और अलम व शुद्दे निकालते हैं, ढोल ताशे और तरह–तरह के बाजे बजाते हैं। ताज़ियों का बहुत धूम–धाम से गश्त होता है और वहां शरबत मलीदा वग़ैरह पर फ़ातिहा दिलाते हैं ये सोचकर कि हज़रत इमाम आली मक़ाम के रोज़ा और मवाजिहे अक़दस का फ़ातिहा दिला रहे हैं, फिर तीजा, दसवा, चालिसवां सब कुछ किया जाता है और हर एक काम ख़ुराफ़ात पर आधारित होता है, ऐसी बुरी हरकत इस्लाम हरगिज़ जायज़ नहीं रखता।"(बहारे शरीअतः 16/24)

अल्लामा इब्ने तैमिया रह0 लिखते हैंः "हज़रत हुसैन रज़ि0 के क़त्ल से शैतान को बिदअत जारी करने का मौक़ा मिल गया, वो ये कि लोग आशूरा के दिन ग़म व नौहा करते हैं, मुंह और सीना पीटते हैं, रोते और चिल्लाते हैं, प्यासे रहते हैं, मरसिया पढ़ते हैं, और बुज़ुगों पर लान तान करते हैं, हालांकि जिसने ये बिदअत जारी की है उसका मक़सद इसके अलावा कुछ और नहीं कि लोगों में फ़ित्ना और इख़्तिलाफ़ पैदा हो, वरना ये तरीक़ा न वाजिब है न मुस्तहब, बल्कि गुज़री हुई मुसीबतों को याद करके उस पर ग़म व नौहा करना अल्लाह और उसके रसूल स0अ0 के नज़दीक सबसे बड़ा गुनाह है।"

दूसरी बिदअत ये है कि कुछ लोग इस दिन ख़ुशियाँ मनाते हैं। सुबूत में ये हदीस बयान करते हैंः "जो शख़्स आशूरा के दिन अपने ख़ानदान पर रोज़ी वसीअ करता है, अल्लाह तआला की तरफ़ से साल भर उस पर रोज़ी वसीअ हो जाती है।"

इमाम अहमद बिन हम्बल रह0 फ़रमाते हैंः ये हदीस बिल्कुल बेअस्ल है और चारों इमामों में से किसी के नज़दीक न ग़म करना अच्छा है न ख़ुशी करना बल्कि परिवार वालों पर इस रोज़ रोज़ी वसीअ करने, असाराधारण खाने–पीने की रिवायतें दरअस्ल उन लोगों ने गढ़ ली हैं जो हज़रत हुसैन रज़ि0 के विरोधी हैं और उनसे दुश्मनी रखते हैं। (मिन्हाजुस्सुन्नहः 2/282)

रिवायत का जुअफ़

इस रिवायत के रावी सिर्फ़ हीज़म बिन शद्दाख़ हैं जो सबके नज़दीक ज़ईफ़ हैं। अल्लामा इब्ने रजब रह0 इसकी सनद सही नहीं बतायी है और अल्लामा इब्ने जूज़ी रह0 ने इसको मौज़ू में गिना है। कुछ लोगों ने इस हदीस की तहसीन भी की है।

लिहाज़ा कोई व्यक्ति अगर किसी ख़ारिजी जज़्बे के बग़ैर जो दुश्मनी के जज़्बे से हो तो उसको रोका नहीं जायेगा, लेकिन अगर राफ़ज़ियों के मुकाबले में खुशी के इज़हार के लिये ऐसा करता है तो उसको रोकना बेहतर है।

यौम–ए–आशूरा

मुहर्रमुल हराम की दसवीं तारीख़ को आशूरा कहा जाता है। इसकी एक ख़ास अहमियत है। इस दिन का रोज़ा इस्लाम से पहले फ़र्ज़ था। हुज़ूर अकरम स0अ0 मक्के मुकर्रमा में भी इस रोज़े का इहतिमाम फ़रमाते थे।

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 से रिवायत है कि कुरैश जाहिलियत के दिनों में हर साल आशूरा के रोज़ रोज़ा रखते थे। रसूलुल्लाह स0अ0 ने भी जाहिलियत के

दिनों में रोज़ा रखा था और जब हिजरत करके मदीना तश्रीफ़ लाये तो भी आप स0अ0 ने रोज़ा रखा और मुसलमानों को भी रोज़ा रखने का हुक्म फ़रमाया। लेकिन जब रमज़ान का रोज़ा फ़र्ज़ हो गया तो आशूरा के रोज़े की फ़र्ज़ियत ख़त्म हो गयी और अब जो चाहता रोज़े रखता और जो नहीं चाहता नहीं रखता। (मोअत्ता इमाम मालिक रह0)

यौम-ए-आशूरा की ऐतिहासिक हैसियत

दसवीं मुहर्रमुल हराम को इस्लाम से पहले की उम्मतों में भी बहुत इज़्ज़त व वक़ार की नज़रों से देखा जाता था। इसी दिन बनी इस्राईल और हज़रत मूसा अलै0 ने फ़िरऔन के ज़ुल्म व सितम से नजात पायी और फ़िरऔन पूरे लश्कर के साथ समुद्र में डूब गया। इस ख़ुशी में यहूदी इस दिन रोज़ा रखते थे। अल्लाह के रसूल स0अ0 जब मदीना मुनव्वरा तश्रीफ़ लाये तो आप स0अ0 ने यहूदियों से इस काम के बारे में पूछा तो पता चला कि ये लोग इस वजह से रोज़ा रखते हैं तो आप स0अ0 ने फ़रमाया कि हम ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं कि इस रोज़ रोज़ा रखें और साथ ही साथ आप स0अ0 ने ये भी फ़रमाया कि इसमें एक दिन का और इज़ाफ़ा करेंगे, इसीलिये दो दिन रोज़ा रखना चाहिये ताकि यहूदियों से समानता न हो।

आशूरा के रोज़े की फ़ज़ीलत

इस दिन के रोज़े की फ़ज़ीलत सही हदीस से साबित है। हज़रत इमाम बुख़ारी रह0 ने तक़रीबन दस हदीसें इस दिन की फ़ज़ीलत पर नक़ल फ़रमायी हैं। मुहम्मद स0अ0 का इरशाद है: "जो शख़्स आशूरा के रोज़े रखेगा तो उसके एक साल के गुनाह माफ़ हो जायेंगे।"

लिहाज़ा एहतिमाम के साथ रोज़ा रखना चाहिये। ईसाले सवाब के लिये कुरआन पाक की तिलावत और दूसरे ख़ैर के काम करने चाहिये। लेकिन अफ़सोस कि बिदअत व रस्मों ने सुन्नत को इस तरह दबा दिया है कि सही तस्वीर का समझना भी इस हल्क़े में मुश्किल है, जहां मुहर्रमुल हराम की बिदअतों का नंगा नाच जारी है। आज के माहौल में हम अल्लाह तआला की नुसरत की उम्मीद किस तरह कर सकते हैं। जबकि हमारा काम शरीअत के ख़िलाफ़, सुन्नत कि ख़िलाफ़ और दीने हक़ व सीधे रास्ते से हटा हुआ है। मुहर्रम के नाम पर बेपर्दा औरतों को बनावटी कर्बला में जमा होना, बाज़ारों में घूमना और सड़कों और गलियों में आवारा फिरना ये कौन सा दीन है? इसी तरह ढोल ताशे बजाना, सीना पीटना, अपने आप को लहूलुहान कर देना कौन सी दीन की ख़िदमत है? अलबत्ता ये बुज़दिली, बेवफ़ाई की बात है इसे बहादुरी नहीं कहा जा सकता है। फिर 7,8,9,10 की तारीख़ों में मरसिया पढ़ने वाले और ताज़िया के जलसे मे शरीक होने वाले जिस क़दर नमाज़ें छोड़ते हैं, क्या वो सही है? ऐसी उम्मत जो ख़ुराफ़ात में फ़ंस गयी और साल के शुरू ही में इस काम का शिकार हो गयी जो सुन्नत से दूर है तो फिर उसकी नहूसत का साल भर जारी रहना क्या उम्मीद से परे हो सकता है। यही कारण है कि हमारी इतनी बड़ी संख्या है लेकिन हमारा वज़न दिन पर दिन घटता चला जा रहा है। इसलिये कि मुहम्मद स0अ0 की उम्मत की रूह मुहम्मद स0अ0 की सुन्नत पर क़ायम रहने में है इससे हटना मरने के बराबर है। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ से नवाज़े।

पूरी सल्तनत की क़ीमत

हारून रशीद को प्यास लगी उसने पानी मांगा। ठन्डा पानी लाया गया। आरिफ़बिल्लाह हज़रत इब्ने समाक रह0 वहां मौजूद थे। वह कहने लगे हारून पानी पीने से पहले मेरी बात सुनना, कहा बताइये, कहने लगे कि ये बताएं कि अगर आपको बहुत प्यास लग जाये और प्यास ऐसी हो कि बर्दाश्त से बाहर, हलक़ बिल्कुल सूखा हो और पूरी दुनिया में पानी कहीं भी न हो और एक व्यक्ति के हाथ में पानी का प्याला हो, तो आप बताएं कि कितनी क़ीमत देकर पानी के प्याले को ख़रीदेंगे, उसने कहा कि आधी सल्तनत दे दूंगा और पानी का प्याला ख़रीद कर पियूंगा। उन्होंने कहा कि अच्छा आपने पानी पी लिया और पीने के बाद अगर पेशाब बन्द हो गया, निकलता नहीं, और जानते हैं कि पेशाब बन्द होने की हालत में इन्सान मछली की तरह तड़पता है। उसे बर्दाश्त नहीं होता, तो आप मछली की तरह तड़पने लगें। इधर एक डॉक्टर जिसके पास ऐसी दवा है जिससे पेशाब हो जाये, तो आप बतांए कि क्या क़ीमत देकर वो ख़रीदेंगे, उसने कहा आधी सल्तनत देकर ख़रीदूंगा। उन्होंने कहा कि इससे मालूम हुआ कि ये पूरी सल्तनत एक प्याला पानी पीने और फिर उसे जिस्म से निकालने के बराबर है, जबकि तूने तो ज़िन्दगी में हज़ारों प्याला पानी पिया होगा, तो तुमने अल्लाह पाक की कितनी नेमत इस्तेमाल की होगी?बतलाओ उसकी क़ीमत क्या होगी?

इस्लामी अक़ीदा

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

क़ुदरत व अख़्तियार

अख़्तियार व क़ुदरत सिर्फ़ अल्लाह की विशेषता है। वो जो चाहे करे उसको सब अख़्तियार है। उसके आगे किसी को कोई अख़्तियार नहीं। जिस किसी को भी अख़्तियार है वो उसी का दिया हुआ है और सीमित है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में ऐलान फ़रमा दिया:

"कान खोल कर सुन लो उसी का काम पैदा करना और उसी का काम इन्तिज़ाम चलाना।"

ऐसा नहीं है कि वो पैदा करके फ़ारिग़ हो गया और उसने इन्तिज़ाम दूसरों के हाथ में दे दिया हो। और न उसकी मिसाल बादशाहों की है कि वो अपने कामों के लिये वज़ीर रखते हैं और उनको अख़्तियार दिये रहते हैं। जैसा कि मक्का के मुश्रिको का ख़्याल था अलग–अलग देवी–देवताओं के बारे में वे यही विचार रखते थे कि अल्लाह ने उनको पूरा अख़्तियार दे दिया है। कोई बारिश का मालिक है, कोई औलाद देने का, कोई रोज़ी का, इसीलिये वे उन देवी–देवताओं को पुकारते थे मगर सबसे बड़ा अल्लाह को समझते थे, फिर भी उनको मुश्रिक ही बताया गया और आप स0अ0 को इसीलिये भेजा गया कि आप स0अ0 उनको शिर्क के अंधेरे से निकालें और ये यक़ीन पैदा करें कि सब कुछ अल्लाह के अख़्तियार में है। सूरह मोमिनून में मक्का के मुश्रिकों के बारे में कहा जा रहा है:

"पूछिये हर चीज़ की बादशाहत किसके हाथ में है और वह पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता (बताओ) अगर तुम जानते हो। वे फ़ौरन यही कहेंगे कि अल्लाह के हाथ में, आप कह दीजिये कि तो कहाँ का जादू तुम पर चल जाता है।" (मोमिनूनः 88–89)

वो बुनियादी तौर पर मानते थे कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है मगर ये भी अक़ीदा रखते थे कि अल्लाह ने ये अख़्तियार दूसरों को भी दे दिया है, इसीलिये आप स0अ0 भेजे गये ताकि उनके इस मुश्रिकाना अक़ीदे को दूर करें और ये बता दें कि सब कुछ अल्लाह की क़ुदरत और उसके अख़्तियार में है। उसने किसी को ये अख़्तियार नहीं दिया कि वो जो चाहे कर ले, इसकी आख़िरी मिसाल ख़ुद आप स0अ0 की ज़ात है जो नबियों के सरदार हैं, आख़िरी रसूल हैं, अल्लाह के महबूब हैं, मगर आप स0अ0 को सम्बोधित करके कहा जा रहा है: "आप जिसको चाहें उसको हिदायत नहीं दे सकते, हाँ अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है।" (क़ससः 56)

इससे बात साफ़ हो गयी कि अल्लाह के दरबार में किसी को कोई अख़्तियार व क़ुदरत नहीं। क़ुरआन मजीद में आप स0अ0 से कहलवाया जा रहा है:

"कह दीजिये कि मैं तुम्हारे लिये ज़रा भी नुक़सान का मालिक नहीं हूं और न ज़रा भी भलाई का। कह दीजिए कि मुझे अल्लाह से कोई बचा नहीं सकता और न उसके सिवा मैं कहीं भी पनाह की जगह पाता हूँ।" (अलजिन्नः 21–22)

कायनात के सारे प्राणियों में सबसे ऊँचा स्थान हज़रत सरवरे दो आलम स0अ0 का है मगर आप स0अ0 को हुक्म हो रहा है कि उम्मत से साफ़ कह दें कि मैं तुम्हारे फ़ायदे नुक़सान का मालिक नहीं, कहीं तुम धोखे में न पड़ जाना कि हम जो चाहें करें हमारे नबी हमको बचा लेंगे, मैं ख़ुद अपने फ़ायदे नुक़सान का मालिक नहीं, सब अल्लाह करता है।

रिवायतों में है कि जब ये आयत उतरी कि अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराइये तो आप स0अ0 ने अपने रिश्तेदारों को बुलाया, आम सभा भी की और ख़ास तौर पर भी कहा, फ़रमाया: ऐ काब बिन लवी के क़बीले वालों! अपने आप को जहन्नम की आग से बचाने का उपाय करो। मैं तुम्हारे लिये अल्लाह के यहां कुछ अख़्तियार नहीं रखता। ऐ मरवा बिन काब के क़बीले वालो! तुम भी अपने आप को आग से बचाने का उपाय करो। मैं अल्लाह से तुम्हारे लिये कोई अख़्तियार नहीं रखता। फिर आप स0अ0 ने इसी तरह बनू अब्दुश्शम्स को सम्बोधित किया, फिर बनू अब्दे मुनाफ़ को, फिर बनू हाशिम को, फिर बनू अब्दुल मुत्तलिब को सम्बोधित किया। यहाँ तक फ़रमाया: "ऐ फ़ात्मा अपने आप को जहन्नम की आग से बचाओ, मेरे माल में से जो हो मुझसे मांगो लेकिन मैं तुम्हारे लिये अल्लाह के यहाँ कोई अख़्तियार नहीं रखता।"

इस लम्बी हदीस से बात बिल्कुल साफ़ हो जाती है कि जब आप स0अ0 ये फ़रमा रहे हैं जबकि आप स0अ0 को अल्लाह ने वो दिया जो किसी को नहीं दिया और.....

सबसे चहीते नबी के बारे में ये फ़रमा रहे हैं तो फिर कोई दूसरा कैसे भरोसा करके बैठ सकता है कि हम जो चाहे करें अल्लाह के रसूल हमको बख़्शवा देंगे। यक़ीनन आप स0अ0 को शफ़ाअत–ए–कुबरा का हक़ हासिल होगा, मगर उसकी हक़ीक़त समझ लेनी चाहिये जिसको ख़ुद अल्लाह ने कुरआन मजीद में बयान कर दिया है कि सिफ़ारिश अपने अख़्तियार से नहीं होगी बल्कि अल्लाह तआला इजाज़त देगा तो होगीं अल्लाह तआला का इरशाद है: "कौन है जो बग़ैर उसकी इजाज़त के उसके पास सिफ़ारिश कर सके।"

ऐसा नहीं है कि जैसे कोई बादशाह न चाहते हुए सिफ़ारिश कुबूल करता है, बीवी का दबाव होता है, बच्चों का होता है, ख़ास–ख़ास दोस्तों का होता है, बादशाह न चाहते हुए भी इनकी सिफ़ारिश कुबूल करता है, अल्लाह की ज़ात उससे बहुत बुलन्द है। हाँ इसकी मिसाल इस तरह दी जा सकती है कि किसी ने कोई जुर्म किया, बादशाह ख़ुद भी चाहता है कि माफ़ कर दे लेकिन वो अपने ख़ास लोगों से उनका दर्जा बढ़ाने के लिये या किसी मसलहत से सिफ़ारिश कराना है फिर सिफ़ारिश कुबूल करना और माफ़ करना है। अल्लाह तआला भी अपने जिन बन्दों को बख़्शना चाहेगा उनकी सिफ़ारिश करवायेगा और शफ़ाअत का ये दरवाज़ा सबसे बढ़कर आप स0अ0 के लिये खुलेगा। आप स0अ0 तमाम इन्सानियत की शफ़आत उस वक़्त फ़रमायेगे जब जन्नत व दोज़ख़ का फ़ैसला हो चुकेगा और जन्नत वाले जन्नत में जाने का इन्तिज़ार करेंगे और इजाज़त का इन्तिज़ार होगा तो वो एक–एक नबी के पास जायेंगे। सब ही माफ़ी चाहेंगे आख़िर में आप स0अ0 के पास आयेंगे और उनकी सिफ़ारिश से सब जन्नत वाले जन्नत में दाख़िल किये जायेंगे। ये शफ़ाअत कुबरा कहलाती है। इसकी और तफ़सील इंशाअल्लाह रिसालत के अध्याय में बयान की जायेगी।

मालूम हुआ कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। न रोज़ी देना किसी के अख़्तियार में है, न पानी बरसारा, न औलाद देना, न फ़ायदा–नुक़सान पहुंचाना और ये जो कुछ लोग नबियों, बुज़ुर्गों के बारे में ये विचार रखते हैं कि उनको कुदरत तो है मगर वो अल्लाह के सामने अपनी कुदरत को ज़ाहिर नहीं करते और इसको अदब के ख़िलाफ़ समझते हैं। अगर चाहें तो एकदम उलट–पुलट कर दें मगर अदब में ऐसा नहीं करते, ये सब मुश्रिकाना विचार है, अल्लाह फ़रमाता है:

"और अल्लाह के अलावा वो ऐसों को पूजते हैं जो आसमानों और ज़मीन में उसके रिज़्क़ के कुछ भी मालिक नहीं और न वो उनके बस में है।" (नहल: 73)

एक जगह आप स0अ0 के वास्ते से पूरी उम्मत को कहा जा रहा है:

"और अल्लाह के अलावा किसी ऐसे को मत पुकारना जो न तुम्हें फ़ायदा पहुंचा सके, न नुक़सान पहुंचा सके बस अगर आपने ऐसा किया तो ज़रूर आप नाइन्साफ़ों में हो जायेंगे।" (यूनुस: 106)

ऐसे ज़बरदस्त ज़ात वाले क़ादिरे मुतलक़ के होते हुए किसी और को पुकारना कैसी नाइन्साफ़ी और बेवकूफ़ी है। पीराने पीर शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह0 ने इसको एक मिसाल से बड़ी अच्छी तरह समझाया है और जो लोग मुसीबतों को दूर करने या किसी तरह का फ़ायदा पाने के लिये अल्लाह के अलावा किसी और का सहारा लेते हैं उनकी मूर्खता का नक़्शा खींच दिया है। वो फ़रमाते हैं: "सारी मख़लूक़ को एक ऐसा आदमी समझो जिसके हाथ एक बहुत महान व बड़े साम्राज्य के राजा ने जिसका राज्य महान है, उसकी ताक़त का अन्दाज़ा नहीं है, बांध दिये हों फिर उस बादशाह ने उस आदमी के गले में फन्दा डाल दिया है, और उसके पैर भी बांध दिये, उसके बाद सनोबर के एक ऐसे पेड़ पर लटका दिया है जो ऐसी नदी के किनारे पर है जिसकी मौजें ज़बरदस्त, चौड़ाई बहुत, गहराई बेपनाह, जिसका बहाव बहुत तेज़ है, उसके बाद बादशाह ख़ुद एक ऐसी कुर्सी पर बैठ गया है जो बड़ी शानदान और बहुत बुलन्द है इतनी कि उस तक पहुंचने का इरादा करना और पहुचंना मुहाल है, उस बादशाह ने अपने पहलू में तीरों, भालों, बरछों, और हर तरह के हथियारों का इतना बड़ा ज़ख़ीरा कर लिया है कि उसका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता है। अब जो शख़्स इस मन्ज़र को देखे, क्या उसके लिये ये मुनासिब है कि बादशाह की तरफ़ देखने के बजाए, उससे डरने और उम्मीद लगाने के बजाए, उस सूली पर लटके हुए शख़्स से डरे और उससे उम्मीद लगाये, जो शख़्स ऐसा करे क्या वो हर अक़्ल वाले के निकट बेअक़्ल, मजनू और जानवर कहलाने योग्य नहीं।" (तक़वीयतुल ईमान: 41)

सहाबा-ए-किराम की महानता

कुरआन व हदीस की रोशनी में

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

इस्लाम की साफ़ सुथरी शिक्षाएं जिन पवित्र हाथों के द्वारा हम तक पहुंची वे लोग सहाबा किराम रज़ि0 थे। अल्लाह का यही तरीक़ा रहा है कि पाक चीज़ों को पहुंचाने के लिये पाक लोगों को चुना जाता है। अल्लाह का इरशाद है:

"साफ़ सुथरी चीज़ें साफ़ सुथरे लोगों के लिये, और पाक लोग पाक चीज़ों के लिये होते हैं।" ये पाक दीन भी उन्हीं पाक लोगों के द्वारा हम तक पहुंचा।

इस्लाम के इन सबसे पहले निर्माणियों को चाहे वे मुहाजिर हों या अन्सार, अल्लाह ने "अस्साबिकूनल अव्वलून" के लक़ब से याद किया है। उनके लिये अपनी रज़ामन्दी का ऐलान फ़रमाया फिर उस ऐलान को अपनी न ख़त्म होने वाली किताब में हमेशा के लिये लिख दिया:

"वो सबसे पहले सबक़त करने वाले मुहाजिरीन व अन्सार और इख़लास के साथ उनके पीछे चलने वाले सभी लोग, अल्लाह उन सबसे राज़ी हुआ, वे भी अल्लाह से ख़ुश हुए।"

इस पाक गिरोह के सामने अल्लाह तआला ने अपने नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा स0अ0 पर पूरा कुरआन उतारा, फिर यही मुबारक जमाअत थी जिसे सम्बोधित करके अल्लाह तआला ने ये ऐलान किया:

"आज के दिन मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को पूरा किया, तुम पर अपनी नेमत तमाम कर दी और इस्लाम को तुम्हारे लिये दीन के तौर पर पसंद कर लिया।" इसमें कोई शक नहीं कि ये मुबारक आयत सारी उम्मत के लिये गौरान्वित होने का कारण है। लेकिन उसके सबसे पहले हक़दार सहाबा किराम थे।

सहाबा के ईमान को वास्तविक ईमानी स्तर घोषित कर किताब वालों को दावत दी गयी कि अगर वे हिदायत चाहते हैं तो इसी तरह ईमान लायें: "इसी तरह ईमान लायें जिस तरह तुम ईमान लाये हो" तो वो हिदायत पाने वाले हैं और अगर उन्होंने मुंह मोड़ा तो वे विद्रोही हैं उनसे निपटने के लिये आपके वास्ते अल्लाह ही काफ़ी है।

अस्सी से ज़्यादा जगहों पर अल्लाह तआला ने "या अय्योहल लज़ीना आमनू" के द्वारा उनको सम्बोधित किया। मानों ख़ुद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनके ईमान की गवाही दी। "गवाही के लिये तन्हा अल्लाह काफ़ी है।"

उनकी पैदाइश से सैंकड़ों हज़ारों साल पहले अपनी पवित्र किताब तौरेते में अल्लाह ने उन पाक लोगों का ज़िक्र किया जिनको आख़िरी नबी का साथ नसीब होना था। उनके काफ़िरों पर भारी होने और आपस में हद दर्जे तक शफ़ीक़ होने की गवाही ख़ुद अल्लाह ने दी। इसकी गवाही दी कि उनके माथे सजदों के प्रकाश से प्रकाशित होंगे। वे अल्लाह की रज़ा के लिये बेक़रार रहते हैं। (मुहम्मद अल्लाह के रसूल है, और जो लोग उनके साथ हैं वो काफ़िरों पर बहुत भारी और आपस में बहुत रहमदिल हैं, तुम उनको रुकू में, सजदों में देखोगे, अल्लाह के फ़ज़ल और रज़ामन्दी की चाहत रखते हैं, सजदों के असर से उनकी पहचान ख़ुद उनके चेहरों पर है) उनकी यही शान तौरेते में दी गयी है। मक्का की विजय से पहले और मक्का की विजय के बाद ख़र्च करने वालों और जेहाद करने वालों के बीच दर्जे के फ़र्क़ को बयान करके अल्लाह ने फ़रमाया: "हर वर्ग के लिये अल्लाह की तरफ़ से भलाई का वादा है।"

अल्लाह तआला ने इस मुबारक जमाअत को कलिमा-ए-तैय्यबा का अस्ल योग्य घोषित कर दिया, मानो जिस तरह नबूवत व रिसालत के लिये अल्लाह की तरफ़ से चुना जाता है, उसी तरह सहाबियत के लिये भी अल्लाह की तरफ़ से चुना गया। उनके अहले तक़वा होने की बात और यूं और साफ़ किया गया:

"अल्लाह ने उनको तक़वे की बात पर क़ायम रखा, वही इसका सबसे ज़्यादा हक़ रखते थे और उसके अहल थे।"

(शेष: पेज 18 पर)

हिन्दु राष्ट्र
वास्तविकता क्या है?

डॉक्टर सैय्यद क़ासिम रसूल इलियास

आर एस एस के मार्गदर्शक आये दिन भारत को हिन्दु राष्ट्र बनाने का राग अलापते रहते हैं। दूसरी ओर इस विचार के विरोधी जवाबी नारो से इसका विरोध करते हैं। फिर भी अभी तक इस समस्या पर कोई अमली बहस या बातचीत आरम्भ नहीं की जा सकी है। न तो हिन्दु राष्ट्र की वकालत करने वाले अपने विचारों की दलील देश के सामने प्रस्तुत कर सके और न ही उसके विरोधियों ने कभी बातचीत व चर्चा का निमन्त्रण दिया। बिल्कुल इसी तरह देश में अक्सर यूनिफ़ार्म सिविल कोड की बहस छिड़ जाती है। न तो यूनिफ़ार्म सिविल कोड का दावा करने वाले ये साबित कर सके कि भारत जैसे देश के लिये जिसमें विभिन्न धर्म व सभ्यता के लोग अपनी अलग और धार्मिक पहचान के साथ सदियों से रहते आ रहे हैं, यूनिफ़ार्म सिविल कोड की क्या आवश्यकता है? उन्हें बीते किसी भी युग में हंसी ख़ुशी रहने के लिये यूनिफ़ार्म सिविल कोड फ़ैमिली लॉ की आवश्यकता नहीं पड़ी। इसके विपरीत यूरोप के बहुत से देशों में रहने वाले इसाइयों के बीच एक ही धर्म व सभ्यता के होने के बावजूद न केवल कई जंगे हो चुकी हैं बल्कि इस समय भी वो कई जातियों में बटे हुए हैं। एक आस्था व एक धर्म उन्हें एक परिवार न बना सकी।

हिन्दु राष्ट्र वास्तव में आर.एस.एस. का एक राजनीतिक विचार है जिसके द्वारा वो इस देश के उच्च वर्ग (ब्राहम्ण) की भारतीय समाज पर चौधराहट स्थापित करना चाहती है। इसके लिये वो कभी हिन्दु की परिभाषा देते हुए उसे एक धर्म के बजाए एक राजनीतिक विचार, जीवन यापन का मार्ग बनाकर प्रस्तुत करती है। आर एस एस के मार्गदर्शकों का कहना है कि जो भी लोग भारत में रह रहे हैं वे हिन्दु हैं। चाहे उनके इबादत के तरीक़े, उनके रस्म व रिवाज कितने ही भिन्न क्यों न हों। ये बिल्कुल इसी प्रकार है कि जर्मनी के रहने वाले जर्मन और इंग्लैण्ड के रहने वाले अंग्रेज़ हैं। इसीलिये अक्सर आर एस एस के मार्गदर्शक ये भी कहते हैं कि अगर मुसलमान स्वयं को मुहम्डन हिन्दु कहलाना शुरू कर दें तो हमारा उनसे कोई झगड़ा ही बाक़ी नहीं रहेगा।

लेकिन आर एस एस की परेशानी ये है कि भारत में हिन्दु केवल एक जाति का नाम नहीं बल्कि एक धर्म की पहचान भी हिन्दु शब्द ही से होती है अतः हिन्दु शब्द को धर्म से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। दामोदर सावरकर ने सन् 1923 ई0 में पहली बार एक नये शब्द हिन्दुत्व का अविष्कार किया। जिसकी परिभाषा देते हुए उसने लिखाः "हिन्दुत्व वास्तव में भारतीय समाज के जीवन यापन का तरीक़ा है जिसका इतिहास, सभ्यता और जिसके पूर्वज एक हैं।" बी.जे.पी. ने इस सिद्धान्त को बयान करने के लिये कल्चरल नेशनलिज़्म (सांस्कृतिक राष्ट्रवाद) और इन्टेगरल हयूमनिज़्म (सम्पूर्ण मानवतावाद) नामक शब्दों का अविष्कार किया।

लेकिन 'मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों–ज्यों दवा की' की कहावत चरितार्थ हुई कि कोई शब्द भी विपरीत आस्था, रस्म व रिवाज और अलग–अलग ज़ातों में बटी केवल नाम की हिन्दु जाति को एकत्रित नहीं कर सका। आर एस एस नेतृत्व की एक समस्या ये भी है कि वह ये समझती है कि जब तक मुसलमानों को, जो अपनी अलग सभ्यता व वैचारिक अस्तित्व रखते हैं केवल नाम की हिन्दु सभ्यता में मिला न लिया जाये (कभी जातिवाद के नाम पर और कभी इतिहास और पूर्वजों की समान विरासत का हवाला देकर) वे जात–पात और ऊँच–नीच में बटी हिन्दु जाति की एकता का विचार नहीं दे सकती। ब्राहम्ण नेतृत्व की एक समस्या ये भी है कि वे ये समझते हैं कि भारत में हिन्दु धर्म से विद्रोह के नाम पर जो भी धार्मिक आन्दोलन, कभी बौद्ध धर्म के नाम, कभी जैन धर्म के नाम और कभी सिक्ख मत के नाम पर उठे, उन्होंने बहुत ख़ूबसूरती और चालाकी के साथ उन्हें हिन्दु समाज का ही हिस्सा बना दिया। लेकिन ईसाई व इस्लाम धर्म के मानने वालों को लाख कोशिशों के बावजूद अपने में नहीं मिला सके, बल्कि हिन्दु धर्म से निकल–निकल कर बड़ी संख्या में लोग इस्लाम और ईसाईयत स्वीकार कर रहे और आज भी ये क्रम जारी है।

ब्राहम्णवाद की दूसरी समस्या ये है कि हिन्दु जाति को जोड़ने के लिये उनके पास न कोई ऐसी आस्था है जो आपस में बटे हुए और विपरीत वर्गों को जोड़ सके और न ही सामाजिक स्तर पर एकता व समानता और भाईचारे का वह विचार है जो इस्लाम की ओर से अल्लाह की एकता

और आदम की औलाद होने की एकता के विचार पर आधारित हो। इसलिये वे कभी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विचार प्रस्तुत करते हैं तो कभी देश को उपासक की संज्ञा देकर एकता का सूर फूंकने का प्रयास करते हैं।

बदक़िस्मती से जो लोग बरसों से हिन्दु राष्ट्र का सपना देख रहे थे और हिन्दुत्व के उधेड़बुन में लगे हुए थे, आज देश के अच्छे व बुरे के मालिक बन बैठे हैं और चाहते हैं कि उनकी ये सत्ता सदृढ़ हो जाये। अतः इसके लिये नित नये उपाय और नयी रणनीतियां बनाने में लगे हुए हैं। इसी का एक प्रदर्शन उस समय हुआ जब हाल में आर एस एस के संचालक मोहन भागवत ने अपने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए एक ओर तो भारत को हिन्दु राष्ट्र बनाने के अपने प्रण की घोषणा की तो दूसरी ओर ये भी कहा कि आने वाले पाँच सालों के अन्दर हमें देश के सभी हिन्दुओं में बराबरी और समानता लानी है। हमारा प्रयास होना चाहिये कि सभी हिन्दु एक ही जगह से पानी पियें, एक जगह पर पूजा–पाठ करें और मरें तो एक ही शमशान घाट पर उनको जलाया जाये।

काश कि वो आगे ये भी कहते कि दलित के बेटे से ब्राहम्ण की बेटी का विवाह हो जाये, ऊँच–नीच, छुआ–छूत पर आधारित जात–पात की अमानवीय व्यवस्था समाप्त की जाये। वर्ण आश्रम के अमानवीय सिद्धान्त की समाप्ती के लिये हिन्दु धर्म के सभी धार्मिक गुरू और शंकराचार्य सामने आयें।

यहां इस बात की चर्चा करना भी ठीक होगा कि भारत में मुसलमानों के आने से पहले न तो इस देश में हिन्दु नाम का कोई धर्म था और न ही हिन्दु नाम की कोई जाति बसती थी। मुसलमान जब यहां आये तो उन्होंने सिंध नदी के चारों ओर बसी जाति को पहले सिंधु और बाद में हिन्दु का नाम दिया। हिन्दु फ़ारसी व अरबी भाषा का शब्द है। फ़ारसी में हिन्दु का अर्थ चोर और काले के होते हैं।

अरब में भारत के रहने वालों को आज भी हिन्दी कहा जाता है। आर एस एस के सर संघचालक को ये बताना चाहिये कि मुसलमानों के आने से पहले भारत के रहने वाले किस धर्म को मानते थे और उन्हें क्या कहा जाता था। इसी प्रकार उन्हें ये भी बताना चाहिये कि क्या इतिहास के किसी दौर में भारत में हिन्दु राष्ट्र का कभी कोई अस्तित्व था, यदि ऐसा होता तो देश के विभाजन के बाद भारत का निर्माण करने वाले एक धर्मनिरपेक्ष संविधान पर भारत का आधार रखने के बजाए इस्लामी पाकिस्तान के जवाब में भारत को भी हिन्दु राष्ट्र बना देते। आर एस एस का हिन्दु राष्ट्र एक विचार मात्र है, जिसके वास्तविकता में परिवर्तित होने की सम्भावनाएं इसलिये भी नहीं है कि इसका न तो विचार किसी के पास मौजूद है और न इसकी कोई कार्यप्रर्णाली इतिहास के किसी दौर में इस देश में कभी प्रचलित रही है। यद्यपि हिन्दु राष्ट्र के नाम पर इस समय जो शोर मचाया जा रहा है उसको देखते हुए जिन बातों का अनुभव हो रहा है वो इसके अलावा और क्या है कि, देश के विभिन्न वर्गों में नफ़रत पैदा की जाये, स्कूलों के पाठ्यक्रम में प्राचीन सभ्यता के नाम पर इतिहास को गलत रूप से प्रस्तुत किया जाये। वैदिक हिसाब और गीता प्रवचन के नाम पर एक धार्मिक किताब को जबरन पढ़ाया जाये, गऊ मूत्र को रामबाण इलाज के रूप में प्रस्तुत करके आयुर्वेदिक दवाओं में इसके प्रयोग को प्रचलित किया जाये और योगा की सरकारी सरपरस्ती की जाये। क्या यही हिन्दु राष्ट्र है?

ये मिल्लत

"ये वो मिल्लत है जो डूबते हुए जहाज़ को किनारे तक पहुंचा सकती है और किसी गिरते हुए समाज को जो ज़मीन में बिल्कुल धंस रहा है, और जो ख़ुदकुशी और आत्महत्या पर आमादा है, बचा सकती है। इसलिये कि उसके पास अल्लाह की वो किताब है, उसके पास नबी को वो नमूना है, उसके पास वो ईमान मौजूद है, जो उसको बिल्कुल दौलतपरस्त, ताक़त परस्त, शासन परस्त और भौतिकवादी बनने से रोकता है। केवल यही वो मिल्लत है जिसको इस ज़िन्दगी के बाद दूसरी ज़िन्दगी का यक़ीन है। इस पर ग़फ़लत के चाहे कितने ही और कैसे ही मोटे पर्दे पड़ें, उस पर ख़ुद को फ़रामोश करने के कितने ही दौरे पड़ें, उसके दिलों के अन्दर ये बात बाक़ी है कि ख़ुदा के सामने जाना है, अल्लाह के रसूल स0अ0 को मुंह दिखाना है और अपनी ज़िन्दगी का हिसाब पेश करना है। वहां न इज़्ज़त काम आयेगी, न दौलत, न ताक़त काम आयेगी, फ़र्ज़ का एहसास, सच्ची इबादत और अल्लाह की मख़लूक़ की बेग़रज़ ख़िदमत काम आयेगी और ईमान व नेक काम काम आयेंगे।

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह०

मुहर्रमुल हराम और ताज़ियादारी
इमामों और बुज़ुर्गों के फ़तवे

अल्लामा इब्ने तैमिया रह0 का फ़तवा

आशूरा के दिन मातम व नौहा की बिदअत जो चेहरा पीटने और वावेला मचाने और रोने–धोने और मर्सिया पढ़ने से मनायी जाती है। बुज़ुर्गों पर बदज़बानी और लानत मलामत यहां तक कि साबिकूनल अव्वलून (बड़े सहाबियों) की शान में गुस्ताख़ी तक की जाती है।

(मिन्हाजुस्सुन्नहः 2/240)

हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह0 का फ़तवा

अगर हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत वाले दिन को ग़म का दिन कहना जायज़ होता तो उससे कहीं ज़्यादा हक़दार दोशम्बे का दिन है। इसी दिन आप स0अ0 और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने वफ़ात पायी। (ग़नीयतुत्तालिबीनः 2/72)

इमाम ग़ज़ाली रह0 का फ़तवा

वक्ता हो या कोई भी उसके लिये केवल हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत के वाक़्यात बयान करना हराम है। इसी तरह सहाबा रज़ि0 में से जो आपसी इख़्तेलाफ़ हुआ उसको भी बयान करना ठीक नहीं है क्योंकि ये बातें सहाबा किराम रज़ि0 के साथ बुग़्ज़ पैदा करती हैं। (एहयाउल उलूम)

हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह0 का फ़तवा

ऐ बनी आदम! तूने ऐसी झूठी रस्में अपना ली हैं जिससे दीन बदल गया है। जैसे आशूरा के दिन जमा होकर बेकार की हरकते करते हो। एक जमाअत ने उस दिन को ग़म का दिन बना रखा है। क्या तुम नहीं जानते कि ये सब दिन अल्लाह के हैं और सारे हादसे अल्लाह की मर्ज़ी से होते हैं। अगर हज़रत हुसैन रज़ि0 इस रोज़ शहीद किये गये तो और कौन सा दिन है जिसमें अल्लाह के महबूब की मौत न हुई हो। (तजदीदे अहयाए दीनः 96)

शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रह0 का फ़तवा

मुहर्रम की मजलिसो मे और ताज़िया की ज़ियारत करने और रोने धोने के लिये जाना ठीक नहीं। क्योंकि वहां कोई ज़ियारत नहीं होती और ताज़िये जो बनाये जाते हैं वे ज़ियारत के लायक़ नहीं बल्कि तोड़ कर फेंक देने के लायक़ हैं। (फ़तावा अज़ीज़ियाः जिल्द 1)

मौलाना अब्दुल हयि फ़िरंगी महली रह0 का फ़तवा

ताज़िया बनाना, अलम रखना, सीना पीटना, मलीदा और शरबत ताज़िये के सामने रखना उस पर नज़र व नियाज़ देना और उसको तबर्रुक समझ कर खाना पीना ये सब काम बिदअत और मना हैं। इसका करने वाला फ़ासिक़ है। (फ़तावा अब्दुल हयिः 1/106)

मुफ़्ती किफ़ायतउल्लाह साहब रह0 का फ़तवा

ताज़िया बनाना, उसकी ताज़ीम करना, उससे मन्नत व मुरादें मांगना, चूमना, अलम निकालना, दुलदुल बनाना, तख़्त उठाना, मेंहदी लगाना, मर्सिया पढ़ना, मातम और नौहा करना, छातियां पीटना ये सब काम नाजायज़ और हराम और शिर्क के बराबर हैं। शरीअते पाक में ऐसे कामों की इजाज़त नहीं। ये इस्लामी तौहीद और पैग़म्बर स0अ0 की सही और सच्ची तस्वीर के ख़िलाफ़ है। (किफ़ायतुल मुफ़्तीः 1/238)

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह0 का फ़तवा

ताज़ियादारी और मर्सिया पढ़ना ये तो पता नहीं कि शुरूआत किसकी है फिर भी तैमूर की तरफ़ निस्बत करते हैं। मगर रस्म शिया की है और बुरी बिदअत में से है और बिदअत के बारे में कहा गया हैः "हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम ले जानी वाली है।" (इमदादुल फ़तावाः 5/294)

मुफ़्ती मुहम्मद हसन साहब गंगोही रह0 का फ़तवा

मुहर्रम के महीने में ताज़िया अलम के साथ निकालना और उसके साथ मर्सिया पढ़ना और जुलूस के साथ शरीक होना और नज़रे हुसैन की सबील निकालना, उसका पीना और पिलाना और उसको सवाब समझना, ये सारे काम बिदआत व नाजायज़ हैं और राफ़ज़ियों के काम हैं। उनमें शिरकत करना नाजायज़ है। (फ़तावा महमूदियाः 1/188)

मुफ़्ती रशीद अहमद साहब का फ़तवा

मुहर्रम के दस दिनों में मुसलमानों की ज़्यादातर संख्या मातम की मजलिस और ताज़िया का जुलूस देखने के इंतिज़ार में जमा हो जाती है। इसमें कई गुनाह हैं एक ये कि इसमें सहाबा और कुरआन के दुश्मनों की समानता है। दूसरा गुनाह ये कि इससे इस्लाम दुश्मनों की रौनक़ बढ़ती है। दुश्मनों की रौनक़ बढ़ाना बहुत बड़ा गुनाह है। तीसरा गुनाह ये है कि जिस तरह इबादत को देखना इबादत है उसी तरह गुनाह को देखना भी गुना है। (अहसनुल फ़तावाः 1/394)

अहमद रज़ा ख़ाँ साहब के फ़तवे

1– रायज ताज़ियादारी बुरी व ख़बीस बिदअत का संग्रह है। इसका बनाना, देखना जायज़ नहीं, और ताज़ीम व अक़ीदत सख़्त हराम व संगीन बिदअत है। अल्लाह तआला मुसलमान भाइयों को सीधी राह की हिदायत फ़रमाये। आमीन! (फ़तावा रिज़वियाः 24/499)

2– ताज़िया मना है। शुरू में कुछ अस्ल नहीं और जो कुछ बिदआत उसके साथ की जाती हैं सख़्त नाजायज़ हैं। (फ़तावा रिज़वियाः 24/499)

3– ढोल बजाना हराम और जिस रात का नाम ख़ुदाई रात उनमें बजाए इबादत के गुनाह और मासियत करना मानो गुनाह को माज़ अल्लाह इबादत ठहराना है और ये और ज़्यादा हराम है। (फ़तावा रिज़वियाः 24/491)

4– पाइक बनना नक़ल करना और बेहूदा बात है। फ़क़ीर बनकर बिना ज़रूरत भीख मांगना हराम है और ऐसों को देना भी हराम है। (फ़तावा रिज़वियाः 24/494)

5– मातम करना, छाती पीटना भी हराम है। अलम, ताज़िये, बाजे, खेल तमाशे, सब बेहूदा बिदअत और मना हैं। (फ़तावा रिज़वियाः 24/496)

6– अलम, ताज़िये, मेंहदी, उनकी मन्नत, गश्त, चढ़ावा, ढ़ोल ताशे, मजीरे, मर्सिये, मातम, बनावटी कर्बला को जाना, औरतों का ताज़िये देखने को निकलना, सब बातें हराम व गुनाह, नाजायज़ व मना है। (फ़तावा रिज़वियाः 24/498)

7– अलम, ताज़िया, बैरक़, मेंहदी, जिस तरह रायज हैं बिदअत हैं और बिदअत से इस्लाम की शौकत नही होती। ताज़िये को मुश्किल कुशा यानि परेशानियों को दूर करने वाला समझना जिहालत पर जिहालत है और इसे मन्नत जानना और बेवकूफ़ी और न करने को नुक़सान की वजह समझना वहम है। मुसलमानों को ऐसी हरकत व ख़्याल से दूर रहना चाहिये। (फ़तावा रिज़वियाः 24/499)

8– ताज़िया नाजायज़ व बिदअत है और इसको बनाना गुनाह है और इस पर शीरीनी वग़ैरह चढ़ाना केवल जिहालत और इसकी ताज़ीम (सम्मान) बिदअत और जिहालत है। और जो ताज़िये को नाजायज़ कहे उसकी वजह से उसे काफ़िर या मुरतद (ईमान से हटा हुआ) कहना बहुत बड़ा गुनाह है। (फ़तावा रिज़वियाः 24/500)

9– आशूरा की रात को रोशनी करना बिदअत व नाजायज़ है। (फ़तावा रिज़वियाः 24/501)

10– ताज़िया पर फ़ातिहा जिहालत, बेवकूफ़ी और बेकार है। (फ़तावा रिज़वियाः 24/501)

11– ताज़िया नाजायज़ है और ऐसी मजलिस में जिसमें माज़ अल्लाह अहले बैत की तौहीन (अपमान) हो हराम है और उसमें शिरकत करना नाजायज़ व हराम है। (फ़तावा रिज़वियाः 24/507)

12– ऐसी मजलिसों में शरीक होना जिसमें मर्सिया इत्यादि होते हैं हराम है। (फ़तावा रिज़वियाः 24/509)

13– खिचड़े के बारे में लिखा है "हां जो उसे शरई तौर पर सही समझे वो ग़लत है।" (फ़तावा रिज़वियाः 24/494)

14– ताज़िया बना कर निकालना, उसके साथ ढोल नक़्क़ारे बजाना, क़ब्र की सूरत बनाकर जनाज़े की तरह निकालना, उस पर फूल वग़ैरह चढ़ाना ये सब बातें नाजायज़ हैं। (फ़तावा रिज़वियाः 24/507)

15– ये जो बाजे, ताशे, मर्सिये, मातम, बर्क़ परी की तस्वीरें और ताज़िये से मुरादें मांगना, उसकी मन्नतें मानना, उसे झुक–झुक कर सलाम करना, सजदा करना इत्यादि बहुत सारी बिदअत इसमें आ गयी हैं। और अब इसी का नाम ताज़ियादारी है, ये हर हाल में हराम है। (फ़तावा रिज़वियाः 24/504)

16– मुहर्रम शरीफ़ में सोग करना हराम है। (इरफ़ान–ए–शरीअतः 1/7)

17– मुहर्रम शरीफ़ में मर्सिया पढ़ने में शिरकत करना नाजायज़ है। (इरफ़ान–ए–शरीअतः 1/16)

मानवाधिकार का पहला घोषणापत्र

जनाब हसन इक़बाल

आज पूरी इस्लामी दुनिया से मुसलमान मक्का मुकर्रमा में एकत्रित हैं और हज का फ़र्ज़ अदा कर रहे हैं। ये एक ऐसा इज्तिमा (सभा) है जो हर साल न केवल अल्लाह तआला से सकंल्प के नवीनीकरण का अवसर प्रदान करता है बल्कि इब्राहीम अलै0 की न समाप्त होने वाली कुर्बानी की भी याद दिलाता है। इस दिन हज़रत इब्राहीम अलै0 ने अल्लाह की इताअत में अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलै0 की कुर्बानी पेश की थी। इससे बढ़कर इस दिन आख़िरी रसूल मुहम्मद स0अ0 का वो भाषण भी है जो न केवल मुसलमानों के लिये बल्कि पूरी दुनिया के मनुष्यों को मानवाधिकार हेतु याद आता है, जहां से जाहिलियत के युग से निकल कर पहली बार मानवाधिकार का आधार रखा गया। इसमें कोई शक नहीं कि इसे "आख़िरी हज का ख़ुत्बा" का नाम दिया जाता है। इसलिये ये पहला और आख़िरी हज है जो हज़रत मुहम्मद स0अ0 ने किया और 9 ज़िलहिज्ज सन् 10 हिजरी मुताबिक़ 6 मार्च 632 ई0 को इस हज के समूह को सम्बोधित किया। ये एक एतिहासिक भाषण है और 1423 इस्लामी और 1380 ईसवी साल बीतने के बावजूद उसके महत्व, उसकी ताज़गी और उसकी ज़रूरत को उसी तरह महसूस किया जा रहा है। इस भाषण में जितनी बातें कही गयीं उन सभी बातों को पूरब व पश्चिम के फ़ुक़्हा व ज्ञानियो ने किसी न किसी रूप में बयान करके मानवता के लिये सिद्धान्तों का निर्माण किया है। आज पूरी दुनिया में अच्छे शासन व ख़ुशहाली के लिये उन सिद्धान्तों को मार्गदर्शक स्वीकारा गया है। सच तो ये है कि मुसलमान क़ौम इस भाषण के आधारभूत सिद्धान्तो व नियमो से भटक गयी है तो ही उसे ये दिन देखने पड़ रहे हैं। यदि हम आज भी इन नियमो व सिद्धान्तो की ओर लौट जाएं तो कोई कारण नहीं कि मुसलमान अपना खोया हुआ सम्मान दोबारा प्राप्त कर लें। आज इस नेक दिन के हवाले से आख़िरी हज के भाषण के बिन्दुओं को देख लेते हैं।

1. आप स0अ0 ने पहले अल्लाह तआला की हम्द व सना फ़रमायी और उसके भाषण आरम्भ किया और कहाः

2. अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वो अकेला है। कोई उसका साझी नहीं। अल्लाह ने अपने नबी की मदद फ़रमायी और अकेले उसने सारी एकत्रित झूठी ताक़तो को पस्त किया।

3. ऐ लोगो! मेरी बात सुनो! मैं नहीं समझता कि आगे हम कभी इस तरह की महफ़िल में एकत्रित हो सकेंगे।

4. लोगो! अल्लाह का इरशाद है कि इन्सानो! हमने तुम सब को एक ही मर्द–औरत से पैदा किया है और तुम्हें समूहो और क़बीलो में बांट दिया ताकि तुम पहचाने जा सको। तुम में ज़्यादा सम्मानित अल्लाह की नज़र में वही है जो अल्लाह से ज़्यादा डरने वाला है।

5. ऐ लोगो! किसी अरबी को ग़ैर अरबी पर और किसी ग़ैर अरबी को अरबी पर, काले को गोरे पर और गोरे को काले पर, आक़ा को ग़ुलाम पर और ग़ुलाम को आक़ा पर, कोई श्रेष्ठता या वरीयता नहीं। हाँ बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत का स्तर केवल तक़्वा है।

6. सारे इन्सान आदम अलै0 की औलाद हैं। अब बड़ाई और तरजीह के सारे दावे, ख़ून और माल की सारी याचनाएं और सारे बदले मेरे पाँव तले रौंदे जा चुके हैं। अब अल्लाह के घर की ज़िम्मेदारी और हाजियों को पानी पिलाने की ख़िदमत बदस्तूर जारी रहेगी।

7. ऐ कुरैश के लोगों! ऐसा न हो कि अल्लाह के दरबार में इस तरह आओ कि तुम्हारी गर्दनों पर दुनिया का बोझ लदा हो और दूसरे लोग आख़िरत का सामान लेकर पहुंचे और अगर ऐसा हुआ तो मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम न आ सकूंगा।

8. कुरैश के लोगो! अल्लाह ने तुम्हारी झूठी ख़ुद्दारी को ख़त्म कर डाला और बाप दादा के कारनामे पर तुम्हारे लिये गर्व की कोई गुन्जाइश नहीं।

9. ऐ लोगो! कहीं मेरे बाद गुमराह न हो जाना कि आपस में ख़ून बहाने लगो।

10. अगर किसी के पास अमानत रखवाई जाये तो वो इसका पाबन्द है कि अमानत रखवाने वाले को अमानत पहुँचा दे।

11. ऐ लोगो! हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है और सारे मुसलमान आपस में भाई–भाई हैं। अपने ग़ुलामों का ख़्याल रखो, हाँ ग़ुलामों का ख़्याल रखो! उन्हें वही खिलाओ जो ख़ुद खाते हो, ऐसा ही पहनाओ जैसा तुम पहनते हो।

12. आज के दिन मैं जाहिलियत की सभी रस्में अपने पैरों तलों रौंदता हूँ और सबसे पहले अपने ख़ानदान का ख़ून माफ़ करता हूँ। मैं रबिया बिन हारिस के दूध पीते बेटे का

ख़ून माफ़ करता हूँ जिसे बनू हुज़ैल ने मार डाला था।

13. ऐ लोगों! मैं ब्याज को ख़त्म करता हूं और सबसे पहले अपने ख़ानदान का ब्याज माफ़ करता हूँ और वो अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का ब्याज है।

14. किसी के लिये ये जायज़ नहीं है कि वो अपने भाई से कुछ ले सिवाए उसके जिस पर उसका भाई राज़ी हो और वो खुशी–खुशी दे दे, खुद पर और एक दूसरे पर ज़्यादती न करो।

15. देखो तुम्हारे ऊपर तुम्हारी औरतों के अधिकार हैं। इस तरह तुम्हारे अधिकार उन पर वाजिबुल अदा हैं। औरतों से बेहतर सुलूक करो क्योंकि वो तुम्हारी पाबन्द हैं।

16. लोगों अपने रब की इबादत करो। पाँच वक़्त की नमाज़ अदा करो। महीने भर के रोज़े रखो। अपने मालों की ज़कात ख़ुशदिली से देते रहो। अल्लाह के घर का हज करो और अपने अमीर की इताअत करो तो अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।

17. ऐ लोगो! अब मुजरिम ख़ुद अपने जुर्म का ज़िम्मेदार होगा। अब न बाप के बदले बेटा पकड़ा जायेगा। न बेटे का बदला बाप से लिया जायेगा।

18. ऐ लोगो! सुनो जो यहां मौजूद हैं, उन्हें चाहिये कि ये हुक्म, ये बातें उन तक पहुँचा दे, जो यहाँ मौजूद नहीं हैं।

19. ऐ लोगो! मैं तुम्हारे बीच एक ऐसी चीज़ छोड़े जाता हूँ कि तुम कभी गुमराह न हो सकोगे, अगर तुम उस पर क़ायम रहे। वह है अल्लाह की किताब।

आख़िर में आप स0अ0 ने सवाल किया कि ऐ लोगो! तुम से अल्लाह के यहां मेरे बारे में सवाल किया जायेगा तो तुम क्या बताओगे? लोगो ने जवाब दिया कि हम इस बात की गवाही देंगे कि हुज़ूर स0अ0 ने दीन हम तक पहुंचा दिया और रिसालत का हक़ अदा कर दिया और हमारी भलाई की। ये सुनकर आप स0अ0 ने शहादत की उंगली आसमान की तरफ़ उठाई और लोगों की तरफ़ इशारा करते हुए तीन बार फ़रमाया। ऐ अल्लाह गवाह रहना। ऐ अल्लाह गवाह रहना। ऐ अल्लाह गवाह रहना।

सुब्हानल्लाह! यह एक ऐसा घोषणापत्र है, जीवनयापन का ऐसा सिद्धान्त है कि अगर इस पर अमल किया जाये तो दुनिया जन्नत का नमूना बन जाये। इसमें न तो नस्ल की श्रेष्ठता है, न गोरे काले का अन्तर है, न कोई श्रेष्ठ है, सब के सब एक जैसे और भाई–भाई हैं। औरतों के अधिकारों की रक्षा विशेष रूप से की गयी है कि उस दौर में औरतों को कमतर समझा जाता था। गुलामों का विचार तक़रीबन न की हद तक कर दिया गया कि उनके साथ अच्छा सुलूक और अपने जैसा रहन–सहन। इससे बढ़कर मानवाधिकार की रक्षा किस प्रकार की जा सकती है। आज पूरब व पश्चिम सब ही इन नये नियमों के तहत नये समाज की स्थापना करने का प्रचार कर रहे हैं। हुज़ूर स0अ0 ने चौदह सौ साल पहले इस व्यवस्था की आधारशिला रखी थी। बतौर मुसलमान इस पर अमल करना न केवल हमारा कर्तव्य है बल्कि मुसलमान होने के नाते ये हम पर क़र्ज़ है जिसका खुदा के सामने हिसाब लिया जायेगा।

शेष : सहाबा–ए–किराम की महानता

वे सब के सब बसीरत वाले थे। (आप कह दीजिए! ये मेरा रास्ता है, मैं ख़ुद और मेरी पैरवी करने वाले पूरी बसीरत के साथ अल्लाह की तरफ़ दावत देते हैं)

तमाम सहाबा किराम रज़ि0 अल्लाह की मदद से मालामाल थे। (अल्लाह ने तुम्हें पनाह दी और अपनी मदद के ज़रिये तुम्हें ताक़त बख़्शी) उन पर अल्लाह तआला की ख़ास निगाह थी। (ऐ नबी! आप के लिये अल्लाह काफ़ी है, और आपकी पैरवी करने वाले मोमिनों के लिये भी अल्लाह काफ़ी है) वो क़यामत के दिन रुस्वा नहीं होंगे। (उस दिन अल्लाह नबी को और नबी के साथ ईमान लाने वाले को रुस्वा नहीं करेगा) उनके लिये दुआए मग़फ़िरत अल्लाह को बहुत पसंद और उनके ताल्लुक से दिलों को हर तरह से पाक व साफ़ रखना अल्लाह को प्रिय है। (और जो लोग उनके बाद आये, यानि मुहाजिरीन व अन्सार के बाद वो यूं दुआ करते हैं: ऐ हमारे परवरदिगार! हमारी मग़फ़िरत फ़रमा और हमारे उन भाइयों की मग़फ़िरत फ़रमा जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं और हमारे दिलों में उन ईमान वालों के लिये कोई कुदूरत न रख, ख़ुदाया! तू निहायत नर्मी वाला मेहरबान है)

रसूल–ए–अकरम स0अ0 को अपने ये सहाबा रज़ि0 इतने अज़ीज़ व महबूब थे कि आप स0अ0 ने बदर के मैदान में अल्लाह तआला के सामने हाथ उठाकर ये बात कही: (ऐ अल्लाह! अगर तूने इस मुठ्ठी भर जमाअत को हलाक कर दिया तो फिर पूरी ज़मीन पर तेरी इबादत नहीं होगी)

बड़े बदनसीब हैं वे लोग जिन्होंने रसूल–ए–ख़ुदा स0अ0 के उन सहाबियों पर लान–तान की, उन पर फ़ब्तियाँ कसीं, उनके दीन में शक किया, और हमेशा की महरूमी में जा पड़े! इस पाक जमाअत से अपने आप को काट देने के बाद भी क्या किसी का मुक़द्दर रोशन हो सकता है?

कैम्पो में शरण

एक मजबूर और बेबस जीवन

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी इस समय गंभीर समस्याओं का सामना कर रही है। उनमें से एक सबसे बड़ी समस्या राजनीतिक शरणार्थियों (Refugee) है। गृह युद्ध, जातिवादी दंगे, हिंसा व राजनीतिक झगड़ो ने बहुत से देशों की चूले हिला दी हैं। एक ओर जहां हज़ारों लोग जंगों में मौत के घाट उतार दिये गये वहीं लाखों लोग जीते जी अपने जीवन से वंचित कर दिये गये। दोस्तों व रिश्तेदारों की मौत के बाद उन्हें भी अपनी मौत का इन्तिज़ार है। वो अपने घरों से बेघर और अपनी जायदादों से महरूम हैं बल्कि उनसे उनके देशों की निस्बत भी छीन ली गयी। अपनी नागरिकता होने के बाद भी वे दूसरे देशों में टुकड़ो पर जीने को मजबूर हैं। अब तक इराक़, सीरिया, बोस्निया इत्यादि जंग के परिणाम में लाखों लोग प्रवास करने पर मजबूर हो चुके हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गृहयुद्ध और हिंसा की जो राह अपनायी जा रही है उससे इन शरणार्थियों की संख्यां बहुत तेज़ी से बढ़ रही है और उनकी समस्याएं हल होने के बजाए और गंभीर होती जा रही हैं। सयुंक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार इस समय करोड़ो लोग घर बार छोड़कर दूसरे देशों में पनाह लेने पर मजबूर हैं और इन शरणार्थियों में एक तिहाई हिस्सा फ़िलिस्तीनियों का है जिनकी संख्या कम से कम पचास लाख से अधिक है। जबकि इस्राईल की बरबरता के परिणाम में ये संख्या बढ़ती ही जा रही है।

शरणार्थियों से संबंधित सयुंक्त राष्ट्र संघ की संस्था (UNHCR) की एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले साल लगभग पांच करोड़ इन्सानों को प्रवास करने पर मजबूर होना पड़ा जो दूसरे विश्वयुद्ध के बाद सब से बड़ी संख्या है। रिपोर्ट के अनुसार अफ़ग़ानिस्तान, सीरिया, सूमालिया और फ़िलिस्तीन के शरणार्थी सबसे अधिक संख्या में है। इसके अतिरिक्त मध्य अफ़्रीक़ी लोकतन्त्र, बरमा और दक्षिणी सूडान में एक बड़ी संख्या को जबरन प्रवास करने पर मजबूर किया गया। पिछले साल सीरिया के गृहयुद्ध के कारण सबसे अधिक प्रवास वहां से हुआ। लगभग पच्चीस लाख लोग प्रवास करने पर मजबूर हुए और लगभग पैसंठ लाख लोगों को देश के अन्दर ही प्रवास करना पड़ा।

1951ई0 में शरणार्थियों से संबंधित सयुंक्त राष्ट्र संघ के कन्वेनशन ने इसे एक अन्तराष्ट्रीय समस्या घोषित कर दिया था और ये क़रार दाद पास की थी कि शरणार्थियों की समस्याएं जल्द से जल्द दूर की जायें और इस बात का यक़ीन दिलाया था कि जो लोग प्रवास करने पर मजबूर हैं, उन्हें दोबारा उनके देशों में नहीं भेजा जायेगा। जहां उनकी जान व माल व इज़्ज़तों को ख़तरा है। लेकिन इन शरणार्थियों की समस्यांए हल होने के बजाए और गंभीर होती जा रही हैं। उनके रहने के लिये सुरक्षित स्थानों की खोज भी पूरी न हो सकी और आम तौर पर उन्हें पनाह देने वाले देश वही हैं जो विकासशील हैं।

इस्राईल की बरबरता के कारण कई लाख फ़िलिस्तीनी प्रवास कर चुके हैं और इराक़ लेबनान, (जहां के कैम्पों और मुलहिक़ इलाक़े की आबादी को "साहिली पट्टी" के नाम से भी जाना जाता है) और सीरिया व मिस्र के कैम्पों में जीवन गुज़ारने पर मजबूर हैं।

इन कैम्पों में जो ज़िन्दगी गुज़ारी जाती है वो किसी क़ैदख़ाने की ज़िन्दगी से कम नहीं। इन कैम्पों में खाद्य सामग्री और जीवन की आवश्यक आवश्यकताओं की ज़बरदस्त क़िल्लत है। स्वास्थ केन्द्र अपर्याप्त हैं और जो हैं वहां भी बुनियादी सहूलतें मुहैया नहीं। एक मामूली संख्या ही यहाँ से नाक़िस फ़ायदा उठा सकती है। इनमें से कई स्वास्थ्य केन्द्र तो हफ़्ते में एक ही दिन खुलते हैं जिससे उनकी "बेहतर कारकरदगी" का अन्दाज़ा लगाना कोई मुश्किल नहीं। मरीज़ों का इलाज अन्दाज़े पर होता है कि डॉक्टरों के पास इतनी फ़ुरसत नहीं कि इनती बड़ी संख्या के हालात पूछ सकें। इसके अलावा मरीज़ों के लिये जो दवांए इस्तेमाल की जाती हैं उनमें से अक्सर इक्सपायर्ड (Expired) होती हैं।

एक गंभीर स्थिति जो इन स्वास्थ्य केन्द्रों में नोट की

गयी है वो ये है कि डॉक्टर उपचार कुछ और लिखता है और दवा कुछ और दी जाती है। बहुत से मरीज़ों को देखे बग़ैर दूसरे मरीज़ों का क़यास करके उनको दवा दी जाती है। ज़्यादा बीमार को हास्पिटल में भर्ती कराया जाता है जहां उसके इलाज के लिये दवांए अपर्याप्त होती हैं और फिर उसके सेहतमन्द होने से पहले ही अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया जाता है।

इन कैम्पों में पानी व बिजली की बहुत अधिक क़िल्लत है। ज़्यादातर टमाटर और रोटी पर गुज़ारा करना पड़ता है, जिसके लिये घन्टों लाइन में खड़ा रहना पड़ता है और कभी–कभी तो वह भी नसीब नहीं होता। फ़ाक़ा करके दिन गुज़रता है। बच्चों की शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं, सफ़ाई सुथराई नहीं, इलाक़े कूड़े कचरे के ढेर से पटे पड़े हैं और कमसिन बच्चे इन ढेरों में खाद्य पदार्थ खोजते फिरते हैं। पानी और बिजली का संकट है। पानी की निकासी के लिये ढंग की व्यवस्था नहीं है इसके नतीजे में बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं और डॉक्टरों की संख्या घटती जा रही है। डॉक्टरों का कहना है कि हम आर्थिक साधनों की तंगी का शिकार हैं। जब कोई वी.आई.पी. इन कैम्पों के दौरे पर आता है तो बहुत तो बहुत एहतिमाम किया जाता है और एक दौरे का ख़र्च मरीज़ों के एक माह के ख़र्च से ज़्यादा होता है। यूरोप व अमरीका की चैरिटेबल संस्थाओं का दावा होता है कि वे शरणार्थियों पर एक लाख डॉलर से ज़्यादा ख़र्च करते हैं। हालांकि उनकी ज़्यादातर रक़म सरकारी दौरों पर और प्रोपगन्डों की स्कीमों में ख़र्च होती है और जब मरीज़ों की देखभाल की बात आती है तो आर्थिक संकट का वावेला मचाया जाता है।

शरणार्थी अपना देश छोड़कर किसी देश में पनाह लें या अपने ही देश में प्रवास को मजबूर हों, हर जगह उन्हें मुसीबतों व मुश्किलों का सामना करना पड़ता है और हालात बता रहे हैं कि उनकी समस्याओं से निपटने और हल करने के सिलसिले में रटी–रटाई बातें कही जाती हैं और केवल ज़बाने हिलायी जाती हैं। इस विषय पर सयुंक्त राष्ट्र संघ और मानवाधिकार आयोग की अन्तराष्ट्रीय संस्थाएं भी बेअसर हो चुकी हैं। इसका एक आधारभूत कारण ये है कि इनमें अधिकता मुसलमानों की है और ये इन्हीं जंगों के परिणाम में बेघर हुए हैं जो जंगे इन मुल्कों ने थोपी हैं जिसे "विश्व शांति स्थापना" के ठेकेदार और मानवाधिकार के रक्षक हैं।

जाँ निसारी

अबुल अब्बास ख़ाँ

उहद की जंग में अचानक पांसा पलटा। काफ़िरों की एक जमाअत ने मुसलमानों को पीछे ढकेल दिया। उनके बढ़ते हुए क़दम रुक गये। अल्लाह के रसूल स0अ0 ज़ख़्मी हुए। दांत मुबारक शहीद हुए। चेहरे मुबारक पर मिग़फ़र की दो कड़ियाँ चुभ गयीं। ख़ून का रिसाव शुरू हो गया। आप कुछ लड़खड़ाए और एक तरफ़ गिर पड़े। शोर मच गया कि अल्लाह के रसूल स0अ0 शहीद हो गये। लेकिन सहाबा कि तलाशती निगाहों ने आपको पा लिया। उन्होंने परवानों की तरह आपको घेर लिया। काफ़िरों ने उसी तरफ़ हमले तेज़ कर दिये। तीरों की बारिश हुई। हज़रत अबू दबाना रज़ि0 ने अपनी पीठ को ढाल बनाया। दोबारा हमला हुआ। अबू तलहा रज़ि0 अपने हाथों पर सारे तीर रोक लिये। हाथ शल हो गया। घमासान की जंग हुई।

मदीना मुनव्वरा ख़बर पहुंची कि अल्लाह के रसूल स0अ0 शहीद हो गये। एक कोहराम मच गया। लोग दीवानों की तरह घरों से बाहर निकल आये। एक ख़ातून ये ख़बर सुनते ही सकते में आ गयीं। जज़्बात बेक़ाबू हो गये। धड़कने तेज़ हो गयीं। आंखो के सामने अंधेरा छा गया। एक–एक को पकड़–पकड़ कर पूछने लगीं कि बताओ रसूलुल्लाह कैसे हैं? किसी ने कहा कि तुम्हारे शौहर शहीद हो गये, उन्होंने कोई तवज्जो न दी, फिर पूछा कि अल्लाह के नबी का क्या हाल है? किसी ने कहा कि तुम्हारे वालिद शहीद हो गये, उन्होंने बात अनसुनी कर दी, कहने लगीं कि ख़ुदारा बताओ की अल्लाह के रसूल स0अ0 का क्या हाल है? किसी ने कहा कि तुम्हारा बेटा शहीद हो गया, उन्होंने फिर तड़प कर कहा कि कोई तो बताओ कि हमारे नबी का क्या हाल है? किसी ने बतलाया कि वो आफ़ियत से हैं। लेकिन दिल को सुकून कहां, तेज़ी से दौड़ पड़ीं देखा कि नबी करीम स0अ0 तश्रीफ़ ला रहे हैं, वह करीब पहुंची, रोये अनवर की ज़ियारत की और बेअख़्तियार पुकार उठीं, "आप के होते हुए सब मुसीबते हैच हैं।"

ये था नमूना सहाबा की मुहब्बत का, मर मिटने के हौसले का, ख़ुद को कुर्बान कर देने के जज़्बे का, ये थी उनकी दीवानगी और उनकी जाँ निसारी!!

अनमोल वचन

हज़रत ज़ैनुलआबदीन अली इब्ने हुसैन रह०

• अल्लाह की इबादत सिर्फ़ अल्लाह के शुक्र के जज़्बे से हो और अगर नहीं तो या फिर वो गुलामों की इबादत है या जन्नत की चाहत।

• गुनहगार, कंजूस, झूठा, बेवक़ूफ़, बेरहम इन पांच तरह के लोगों की संगत अच्छे इन्सानों के लिये ज़रा भी लाभकारी नहीं है।

• दोस्त वो नहीं कि तुम अपनी ज़रूरत पर उससे कुछ मांग लो और उसको ख़ुशी भी न हो।

• नेकी की ओर मार्गदर्शन और बुराई से रोकने का काम न करने वाला कुरआन मजीद से अपना रिश्ता तोड़ लेने वाला है।

• घमन्ड के नशे में भरा हुआ आदमी अगर सोच ले कि मैं एक गन्दी बूंद से पैदा हुआ हूं तो वो कभी भी घमन्ड न करे।

• दुनियादारों के लिये सोचने की बात है कि वो केवल एक नाश हो जाने वाली जगह के लिये ही काम करके रह जाते हैं और हमेशा रहने वाले घर को भूल बैठते हैं।

• इस्लाम से मुहब्बत बतायी हुई हद तक ही होनी चाहिये वरना वो मुहब्बत दुश्मनी की वजह बन जाती है।

• भला आदमी वो है अपने जो अपने आप को ख़ैर का काम करने का पाबन्द बना ले।

• अक़्ल मन्द आमदी फ़ायदा देने वाली महफ़िलों को तरजीह देता है।

• सही इल्म जहां से मिल सके लेने में कोई हर्ज नहीं।

• जिस आदमी की संगत से दीनी फ़ायदा जुड़ा हो उसको छोड़ना नहीं चाहिये।

• इबादत गुज़ार वो आदमी है जो हराम की चीज़ों से बचता हो।

• मुसलमान की पहचान अच्छे पड़ोसी की संगत अपनाना भी है।

• अच्छा इन्सान वो है जो अपने से न जुड़ी हुई बात के पीछे न लगे और अच्छे अख़्लाक़ वाला हो।

• भलाई में वो आदमी है जो अपनी नफ़्स को टटोलता रहता हो और नफ़्स के निरीक्षण का पाबन्द हो।

• आख़िरत की फ़िक्र से ग़म व ख़ौफ़ में रहने वाला व्यक्ति घाटे में नहीं रहता।

• सबसे बुरा शख़्स वो है जो दीन के साथ दुनिया को भी धोखा देता हो।

• वो शख़्स फ़ायदे में है जो मुसीबत पर सब्र और हक़ अदा करने का पाबन्द और बेकार की चीज़ों से बचता हो।

• अल्लाह का प्यारा बन्दा वो है जो गुनाह के बाद तौबा करने को न भूले।

• शरीफ़ आदमी वो है जो अल्लाह की दी हुई चीज़ पर अच्छे से सब्र करे।

• जो शख़्स इल्म को छिपाये या उस पर उजरत मांगे वो इल्म उसको कभी फ़ायदा नहीं पहुंचा सकता।

• छिपा कर सदक़ा करना अल्लाह तआला के गुस्से से दूर रखता है।

• अस्ल तक़वा ये है कि इन्सान अल्लाह तआला का हर घड़ी लिहाज़ रखे।

• दुनिया व आख़िरत के एतबार से फ़ायदे में वो आदमी है जो जिहालत की बात से परहेज़ और ज़ुल्म पर सब्र और बुरी बात से दूर रहने की पाबन्दी करे।

• सब्र करने वाला वो है जो अपने दिल को अल्लाह की इताअत में लगाये रखे और गुनाहों से दूर रहे।

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

VOLUME:06

OCTOBER 2014

ISSUE:10

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
AT A GLANCE

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.